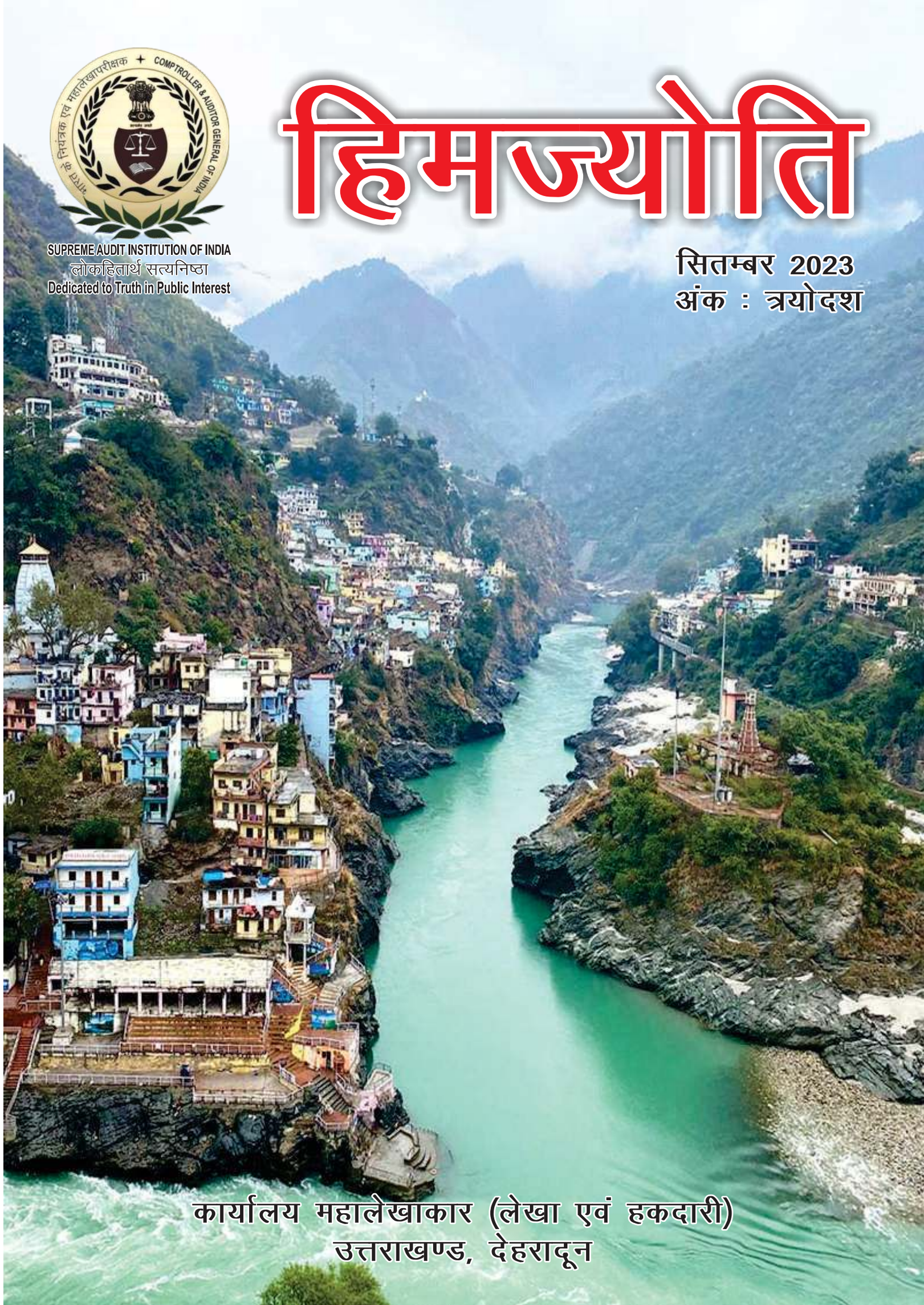


SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिमज्योति

सितम्बर 2023
अंक : त्रयोदश

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून



गंगातट शिवपुरी,ऋषिकेश, उत्तराखण्ड
छायाचित्र – शिवम् लिल्होरी 'बानगी'





हिंदी दिवस 2022

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश



राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियों !

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई सम्पन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिये अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारम्भ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण है और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुये हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आजादी के आन्दोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आन्दोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिये निर्देश दिये गये हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश अजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे है ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो । हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितम्बर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा हिंदी के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिये प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किये हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिये गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुये हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय – समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खण्ड माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खण्ड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14, नवंबर 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस 2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा मे निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किये जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिये 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरू किया है और सुलभ सन्दर्भ के लिये एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों मे भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिये अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित, पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।

प्रिय देशवासियों ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आव्हान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्धोधन देते हैं। जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

(अमित शाह)

नई दिल्ली

14 सितम्बर 2022

सत्यमेव जयते



श्री राजीव कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड

सन्देश

हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "हिमज्योति" का प्रकाशन पिछले 12 वर्षों से लगातार सफलतापूर्वक संपन्न होता आया है। विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हमारी कार्यालयीन हिंदी गृहपत्रिका हिमज्योति के "त्रयोदश" अंक को प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक को अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

राजभाषा किसी राज्य अथवा देश की वह घोषित भाषा होती है, जो कि सभी राजकीय प्रयोजन अर्थात सरकारी काम–काज में प्रयोग होती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अंतर्गत देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश दिए गये हैं। कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "हिमज्योति" राजभाषा के नियमित विकास के क्रम में एक अहम सेतु है। पत्रिका में कार्यालय के कार्मिकों द्वारा प्रेषित की गई रचनाएं यह प्रमाणित करती हैं कि राजभाषा के प्रति जागरूकता एवं कार्यालयीन कार्य–कलापों में इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हम सभी निरंतर रूप से प्रयासरत हैं।

पत्रिका में उत्तराखण्ड के अप्रतिम सौंदर्य की झलक के साथ–साथ द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं कार्यालय की अनेक गतिविधियों के भी चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। पत्रिका के सफल संपादन के लिए मैं हिंदी अनुभाग एवं संपादन मंडल को बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हमारा कार्यालय निर्बाध रूप से पत्रिका को प्रकाशित करता रहेगा।

राजीव कुमार

संरक्षक एवं निदेशक

सत्यमेव जयते



डॉ० काव्यदीप जोशी
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

प्रधान संपादक की कलम से

वर्तमान में हमारी राजभाषा हिंदी भारतवर्ष में सर्वाधिक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अंतर्गत देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। अतः हमारा यह उत्तरदायित्व है कि हम हिंदी भाषा को स्नेहपूर्ण भाव से ग्रहण करें एवं अपना रोजमर्रा का सरकारी काम–काज जहाँ तक संभव हो राजभाषा में ही करने का प्रयास करें। पत्रिका को इसलिए प्रकाशित किया जाता है ताकि हिंदी भाषा के प्रति कार्यालय के कार्मिकों की रूचि में उत्तरोत्तर वृद्धि हो पाये।

हमारी पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सभी कार्मिकों को उनके कार्यालयीन उत्तरदायित्वों के बोध के अतिरिक्त रचनात्मकता एवं लेखन कौशल की क्षमता में वृद्धि करने का एक अवसर मिल जाता है। सरकारी कामकाज हिंदी में करना कोई मुश्किल काम नहीं है। निरंतर प्रयास से यह कार्य अत्यंत सुगम एवं सरल हो जाता है।

अंत में, मैं पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादन मंडल एवं हिंदी अनुभाग के सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ, कि आगामी वर्षों में भी पत्रिका का प्रकाशन इसी उत्साह के साथ होता रहेगा।

प्रधान संपादक

सत्यमेव जयते



श्री तुषार कैन
उपमहालेखाकार (निधि एवं लेखा)

संपादकीय

हिंदी की लोकप्रियता और कई विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार–विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया। पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि कार्यालय के सदस्यों ने पत्रिका के प्रकाशन में अपना सराहनीय योगदान दिया है एवं अपनी रचनाओं को रूचिकर बनाने का प्रयास किया है। साथ ही कार्यालय की गतिविधियों, हिंदी के काम को पत्रिका के माध्यम से दर्शाया गया है।

पत्रिका का यह अंक हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु एक सफल प्रयास है। संपादक मण्डल के सहयोग एवं इसके सफल प्रकाशन के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

संपादक

सत्यमेव जयते



पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी

संदेश

हम सभी का वैधानिक दायित्व है कि हम अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें। हिंदी भाषा को राष्ट्रीय निर्माण का महत्वपूर्ण साधन बनाने की दिशा में इसके महत्व एवं अस्मिता को प्रखर करते हुए अपने राष्ट्र के गौरव को बढ़ाना आवश्यक है। समूचे देश की संपर्क भाषा होने के कारण स्वतंत्रता–संग्राम के दौरान हिंदी की प्रासंगिकता को समझा गया और राष्ट्रभाषा की अवधारणा ने जन्म लिया। सन् 1949 को संविधान सभा में लिए गये निर्णय के अनुसार हिंदी को राजभाषा के रूप में घोषित किये जाने के पश्चात् गृह मंत्रालय के अधीन कार्यरत् राजभाषा विभाग हिंदी के कार्यान्वयन् की दिशा में निरंतर प्रयासरत् है। सूचना प्रौद्योगिकी के फलक पर भी हिंदी की धमक हमें देखने को मिल रही है।

राजभाषा हिंदी के विकास के क्रम में हमारे कार्यालय की हिंदी गृह–पत्रिका "हिमज्योति" एक छोटा सा प्रयास है। हमारे कार्यालयाध्यक्ष, कार्यालय के सभी वरिष्ठ अधिकारियों के निरंतर सहयोग एवं मेरे साथियों के हिंदी के प्रति प्रेम एवं सानिध्य के कारण हम पुनः पत्रिका को प्रकाशित करने में सफल हो पाये हैं।

आशा करती हूँ कि हमारी पत्रिका का यह अंक आप सभी को पसंद आयेगा एवं भविष्य में भी हम इसी प्रकार पत्रिका का प्रकाशन करते रहेंगे।

पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी

"पत्रिका परिवार"

संरक्षक एवं निदेशक

श्री राजीव कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड

प्रधान संपादक

डॉ0 काव्यदीप जोशी
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संपादक

श्री तुषार कैन
उपमहालेखाकार (निधि एवं लेखा)

सलाहकार संपादक

श्री संजीव कुमार
वरिष्ठ लेखाधिकारी

श्री सुशील देवली
वरिष्ठ लेखाधिकारी

श्री अजय कुमार पाल
सहायक लेखाधिकारी

सहायक संपादक

श्री शिवम लिलहोरी
लेखाकार

श्री रूद्र प्रकाश
लेखाकार

साज–सज्जा

श्रीमती बीना रावत
वरिष्ठ लेखाकार

टंकण

श्री चौधरी कौश्तव
आँकड़े प्रविष्टि संचालक

अस्वीकरण: रचनाकारों के विचारों से संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

हिमज्योति संपादक मण्डल



बैठे हुए (बायें से दायें) :

डॉ0 काव्यदीप जोशी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) – प्रधान संपादक
श्री राजीव कुमार, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – संरक्षक एवं निदेशक
श्री तुषार कैन, उप महालेखाकार (निधि एवं लेखा) – संपादक

खड़े हुए (बायें से दायें) :

श्री रूद्र प्रकाश, लेखाकार – सहायक संपादक
श्री शिवम लिल्होरी, लेखाकार – सहायक संपादक
श्री अजय कुमार पाल, सहायक लेखाधिकारी – सलाहकार संपादक
श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ लेखाधिकारी – सलाहकार संपादक
श्री सुशील देवली, वरिष्ठ लेखाधिकारी – सलाहकार संपादक

प्रतिक्रियाएँ

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के द्वादश अंक की प्रति प्राप्त हुई है। एतद्दर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका की साज–सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं अति प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं उच्च स्तरीय हैं। श्रीमती पूजा त्रिपाठी द्वारा लिखित लेख "पर्यावरण की पुकार" पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विचारणीय है। श्री बृजभूषण सेमवाल द्वारा लिखित लेख "देवभूमि उत्तराखंड का जनपद रूद्रप्रयाग", श्रीमती पूनम शर्मा द्वारा लिखित "नीम का पेड़", डॉ दिनेश शर्मा द्वारा लिखित लेख "बोलती तस्वीर", श्री प्रशांत जोशी द्वारा लिखित लेख "दानवीर कर्ण का रोचक प्रसंग" अत्यंत ज्ञानवर्धक, प्रेरक एवं रूचिकर हैं। श्री शिवम् सिंह द्वारा लिखित लेख "हिंदी साहित्य की यात्रा" ज्ञानवर्धक एवं पठनीय है। शेष रचनाएं भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–प्रथम) म0प्र0
ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के द्वादश अंक की प्रति प्राप्त हुई है। जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है, जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के द्वादश अंक की एक प्रति की प्राप्ति हुई है। धन्यवाद। पत्रिका में निहित सभी रचनाएं अत्यंत ही अच्छी हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका "हिमज्योति" का 12 वाँ अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:–

क्रम	रचनाकार	रचनाएं
1	श्री शिवम् सिंह	हिंदी साहित्य की यात्रा
2	डॉ दिनेश शर्मा	बोलती तस्वीर
3	श्री यशपाल सिंह "यशी"	करिश्मा इंसान का
4	श्री शिवम् लिलहोरी "बानगी"	कोरोना डायरीज– भाग–2, डमरू बाजे बंदर नाचे

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्र निदेशक के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
भुवनेश्वर, ओड़िशा

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "हिमज्योति" के द्वादश अंक (ई–प्रति) की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ आभार एवं धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ तथा साज–सज्जा आकर्षक एवं उत्कृष्ट है।

पत्रिका में शामिल सभी रचनाएं स्तरीय हैं। सभी रचनाकारों को साधुवाद। श्रीमती पूनम शर्मा की कविता "नीम का पेड़" तथा श्री अरविन्द सिंह रावत की कविता "मंजिल" अत्यंत प्रशंसनीय हैं। श्री विनोद कुमार शर्मा का आलेख "हिन्दी एवं भारतीय भाषाएं" एवं श्रीमती पूजा त्रिपाठी का आलेख "पर्यावरण की पुकार" अत्यंत ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका की अनुक्रमणिका में रचनाओं की पृष्ठ संख्या अंकित नहीं हो पायी है। कृपया भविष्य में ध्यान दें।

कार्यालय की गृह हिन्दी पत्रिका साहित्यिक प्रतिभा को एक सशक्त मंच प्रदान करती है। यह इसी प्रकार से राजभाषा हिन्दी की प्रगति में योगदान देती रहे, इसी शुभकामना के साथ संपादकीय मण्डल को पुनः बधाई एवं आभार।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

हिंदी पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज–सज्जा हमेशा की तरह अत्यन्त आकर्षक एवं मनोरम है। हिन्दी पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियां और कविताएं, पठनीय, उत्कृष्ट एवं प्रासंगिक हैं। श्रीमती पूजा त्रिपाठी द्वारा लिखित लेख – "पर्यावरण की पुकार", श्री अरविन्द सिंह रावत द्वारा लिखित लेख– "कामकाजी नारी के समक्ष चुनौतियाँ", श्री बृज भूषण सेमवाल द्वारा लिखित आलेख– "देवभूमि उत्तराखण्ड का जनपद रूद्रप्रयाग", श्री विनोद कुमार शर्मा द्वारा लिखित कहानी "ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ता खतरा" तथा कविता के क्षेत्र में डॉ दिनेश शर्मा द्वारा लिखित कविता – "हाल–ए–जमाना",। श्रीमती पूनम शर्मा द्वारा लिखित कविता "नीम का पेड़" एवं अन्य सभी रचनाएं भी विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं और शुभेच्छाएँ हैं।

कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात), रांची

हिंदी पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज–सज्जा हमेशा की तरह अत्यन्त आकर्षक एवं मनोरम है। हिन्दी पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियां और कविताएं, पठनीय, उत्कृष्ट, एवं प्रासंगिक हैं। श्रीमति पूजा त्रिपाठी द्वारा लिखित लेख – "पर्यावरण की पुकार", श्री अरविन्द सिंह रावत द्वारा लिखित लेख– "कामकाजी नारी के समक्ष चुनौतियाँ", बृज भूषण सेमवाल द्वारा लिखित आलेख– "देवभूमि उत्तराखण्ड का जनपद रूद्रप्रयाग", श्री विनोद कुमार शर्मा द्वारा लिखित कहानी "ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ता खतरा" तथा कविता के क्षेत्र में डॉ दिनेश शर्मा द्वारा लिखित कविता – "हाल–ए–जमाना",। श्रीमति पूनम शर्मा द्वारा लिखित कविता "नीम का पेड़" एवं अन्य सभी रचनाएं भी विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं और शुभेच्छाएँ हैं।

कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात), रांची

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 02.11.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "हिमज्योति" के द्वादश अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सुश्री दीपा पवार का लेख "ईमानदारी से मिली सौगात", श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख "हिंदी एवं भारतीय भाषाएं", श्री बृज भूषण सेमवाल का लेख "देवभूमि उत्तराखण्ड का जनपद रूद्रप्रयाग" एवं सुश्री पूजा त्रिपाठी का लेख "पर्यावरण की पुकार" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त श्री अरविंद सिंह रावत की कविता "मंजिल", सुश्री पूनम शर्मा की कविता "नीम का पेड़" एवं श्री यशपाल सिंह "यशी" की कविता "करिश्मा इंसान का" पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक–मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले0 व ह0) हरियाणा, चण्डीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के द्वादश अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं, वो हैं–ईमानदारी से मिली सौगात, बेजुबान आंसू, बात डायरी की, भीगा अहसास आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार, लेखापरीक्षा–II पश्चिम बंगाल

अनुक्रमणिका

विधा	विषय वस्तु	रचनाकार	पृष्ठ
लेख	अलौकिक भू–स्वर्ग तीर्थ स्थल है–तुंगनाथ धाम	बृज भूषण सेमवाल	15–17
कविता	यादों के फेर	शिवम् लिलहोरी "बानगी"	18
लेख	बम	विक्रान्त कुमार	19–20
कहानी	ईमानदारी से मिली सौगात	दीपा पवार	21–23
लेख	नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की स्थिति एवं भविष्य	प्रभात कुमार द्विवेदी	24–26
कविता	जिन्दगी दो मिनट	प्रशांत जोशी	27
लेख	हमारा कार्यालयः इतिहास के आईने में	विनोद कुमार शर्मा	28–30
लेख	वीडियो गेम एक आभासी दुनिया	पूजा त्रिपाठी	31–32
लेख	कहाँ नीती, कहाँ माँणा	डॉ0 दिनेश शर्मा	33–35
कविता	मातृभाषा का सम्मान	विनोद कुमार शर्मा	36–37
कविता	प्रकृति व बेबस इंसान	प्रशांत जोशी	38
कविता	हर–हर महादेव	विक्रान्त कुमार	39
लेख	अनुवाद में भाषायी सौंदर्य का महत्व	महिमानन्द भट्ट	40–43

अनुक्रमणिका

विधा	विषय वस्तु	रचनाकार	पृष्ठ
लेख	द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन	पूनम शर्मा	44–46
लेख	Co-रोना डायरीज भाग–3	शिवम् लिलहोरी "बानगी"	47–49
लेख	खुश रहो और खुशियाँ बाँटो	मोहित कुमार	50
कविता	गूँज रही शहनाइयाँ	पूजा त्रिपाठी	51
लेख	क्रोंच पर्वत पर विराजमान है कार्तिक स्वामी	बृज भूषण सेमवाल	52–53
लेख	पहचान कवि की	शिवम् लिलहोरी "बानगी"	54–56
लेख	हिंदी को जीवन में अनिवार्य स्थान देने की आवश्यकता	विनोद कुमार शर्मा	57–58
लेख	कहीं बिसर न जाये किताबों की महक	शिवम् सिंह	59–60
कविता	ऐ–जिन्दगी	पूजा त्रिपाठी	61
कविता	गर्व की भाषा हिंदी	विनोद कुमार शर्मा	62–63

अलौकिक भू–स्वर्ग तीर्थ स्थल है–तुंगनाथ धाम



बृज भूषण सेमवाल
वरिष्ठ लेखाकार

देवभूमि उत्तराखण्ड राज्य के पर्वतीय क्षेत्र और समुद्र तल से 13072 फीट की ऊँचाई पर बसा है, तुंगनाथ का शिव मंदिर। यह अलौकिक भू–स्वर्ग तीर्थ स्थल बद्रीनाथ और केदारनाथ के बीच गोपेश्वर–ऊखीमठ मोटर मार्ग पर चोपता नामक चट्टी से पैदल 3 कि0मी0 चढ़ाई के बाद आता है। तुंगनाथ का यह शिव मंदिर 50 फीट ऊँचा है। मान्यता है कि पाण्डवों द्वारा बनाया गया था, लेकिन आदिगुरू शंकराचार्य ने इसका सौन्दर्य पूर्ण करके बनवाया। आज भी मंदिर के गर्भगृह में शंकराचार्य की भव्य मूर्ति है। पाण्डवों की प्रतिमायें हैं। वेदव्यास और काल भैरव की दो अष्टधातु की मूर्तियां गर्भगृह में विराजमान हैं। इस मंदिर में श्यामवर्णी शिवलिंग है जिसे शिव जी की बाँह कहा जाता है।



कहा जाता है कि पाण्डव श्राप मुक्ति के लिये बाबा भोलेनाथ को खुश करने हेतु केदारनाथ पहुँच गये थे लेकिन शिवजी पाण्डवों से कुपित थे। दर्शन नहीं देना चाहते थे। केदारनाथ में जहाँ स्थानीय लोगों की भैंसें चर रही थीं वहीं शिवजी भैंसे का रूप धारण करके भैंसों के झुण्ड में मिल गये, अचानक ही एक असाधारण और नये भैंसे को टपका (प्रकट) देखकर भीम को बेहद आश्चर्य हुआ, उन्हें खटका हुआ कि कहीं यह भोलेनाथ जी की करामात तो नहीं है। भीम ने सोचा एक सँकरी घाटी से तो सभी भैंसे गुजरेंगी ही, भीम इस तंग घाटी के दोनों ओर पांव जमाकर खड़े हो गये। कुछ देर में सभी भैंसें गुजर गईं। भैंसे बने शिव पीछे रह गये, वे भीम की टाँगों के नीचे नहीं गये तो भीम समझ गये कि यह असाधारण भैंस के रूप में शिवजी हैं। उन्होंने तपाक से भैंसे को पकड़ना चाहा तो भैंसा तुरन्त जमीन के अन्दर धँसने लगा, तो भीम केवल उसका पृष्ठ भाग ही पकड़ पाये।

कहा जाता है कि शिवजी के यह अंग विग्रह के रूप में पाँच जगहों पर निकले। पृष्ठ भाग केदारनाथ में निकला जहाँ आज भी इसकी पूजा होती है। मध्य भाग मदमहेश्वर में निकला। बाँहें तुंगनाथ, मुँह रूद्रनाथ और जटायें कल्पनाथ में प्रकट हुईं। ये पाँचों धाम पंचकेदार के नाम से जाने जाते हैं। ये धाम मानवीय श्रद्धा, भक्ति, पूजा, अर्चना, विश्वास के पवित्रतम स्थल बन गये।

चन्द्रशिला:– तुंगनाथ से डेढ़ कि0मी0 ऊपर आकाश को छूती चोटी है। चन्द्रशिला जो समुद्रतल से 14000 फीट की दूरी पर बसा है, यहाँ पर चन्द्रमा भगवान ने तप किया था। इस चोटी से विस्तृत शृंखला के दर्शन होते हैं। आस–पास के ऊँचे पर्वत इस चोटी के सामने बौने नजर आते हैं। तुंगनाथ के दूसरी तरफ एक ऊँची चोटी रावण शिला है, यहाँ रावण ने तपस्या की थी।



चोपता:– समुद्र तल से 12000 फुट की ऊंचाई पर बद्रीनाथ से केदारनाथ जाने वाले मोटर मार्ग पर बसा है। यह मार्ग प्रकृति की अत्यन्त रमणीक दृश्यावलियों के बीच से गुज़रता है। देवदार, बाँज, बुराँश के घने सन्नाटेदार वन, जगह–जगह पर मीठे पानी के स्रोत, झरने, मखमली घासों के बुग्याल, हिम शिखरों की रोमांचक पंगत, भेड़–बकरियों के झुण्ड, जंगली पशु–पक्षियों के दर्शन, यात्री और पर्यटक दोनों को मत्रमुग्ध कर जाते हैं। वहीं तुंगनाथ से चोपता के बीच स्वर्ग जैसा क्षेत्र भी कम दिलकश नहीं है। यहाँ आपको हरियाली से रिक्त जगह नहीं मिलेगी, न ही बीहड़ चट्टानें मिलेंगी। पूरे पथ में मखमली बुगी घास, बुरांश के छोटे–छोटे पेड़, देवदार, पांगर, बड़े प्राकृतिक मैदान कश्मीर की वादियों से भी सुन्दर लगते हैं।

दूरी:– ऋषिकेश से गोपेश्वर 212 कि0मी0 दूरी पर है।

गोपेश्वर से चोपता की दूरी 42 कि0मी0 मात्र।

चोपता से तुंगनाथ की दूरी 3 कि0मी0 मात्र।

तुंगनाथ से चन्द्रशिला की दूरी 1.5 कि0मी0 मात्र।

ऊखीमठ से चोपता की दूरी 48 कि0मी0 मात्र।

रहने और खाने की व्यवस्था:– तुंगनाथ में खाने और रहने की उचित व्यवस्था है। यहाँ रहने के लिए होटल, घास–फूस और रिंगाल से बनी दुकानें हैं। वहीं चोपता में भी होटल, ग0म0वि0नि0 (गढ़वाल मण्डल विकास निगम) द्वारा पर्यटक आवास गृह और कैण्टीन है तथा खाने की बहुत सारी दुकानें हैं।

यहाँ आने के लिये ऋषिकेश से चोपता, मोटर–गाड़ी, बस, टैक्सी, कार, मोटर साइकिल के माध्यम से पहुँच सकते हैं तथा चोपता से आप पैदल या घोड़े की सवारी भी कर सकते हैं।

मेरी यात्रा:– 18 जून 2023 को अपने परिवार के साथ तुंगनाथ बाबा के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। मैं और मेरा परिवार निजी वाहन से गुप्तकाशी से चोपता पहुँचे और वहाँ से तुंगनाथ धाम के दर्शन किये। तुंगनाथ मन्दिर में जाकर ऐसा लग रहा था कि मानो शिवजी ने हमें साक्षात दर्शन दे दिये हों, वहाँ शांन्ति की अनुभूति हो रही थी। ऐसा लग रहा था कि सारी जिन्दगी इन प्राकृतिक हिमालय की चोटियों और घाटियों में बस जायें। परिवार में मेरी माँ जी, दीदी जी और बड़े भाई साहब जी और भाभी जी तथा बच्चे,

यथार्थ, ययांशी, काव्या और गौरी तथा मेरी धर्मपत्नी प्रतिभा जी ने भोले बाबा के दर्शन किये। बच्चे बहुत खुश थे। उन्हें बड़ा मज़ा आ रहा था। रास्ते में फोटो खींचते, खाते–पीते और थकान लगने पर भी वे मस्ती कर रहे थे। यहाँ आकर आनन्द की अनुभूति, मन की शान्ति मिल रही थी। तुंगनाथ बाबा का स्वर्ग क्षेत्र बार–बार बुला रहा है। आप लोग भी जिन्दगी के सफर में एक बार तुंगनाथ बाबा के दर्शन करें।



यादों के फेर



शिवम् लिल्होरी "बानगी"
लेखाकार

यादों के फेर में जब से उलझना सीखा,
नादाँ दिल खुद–ब–खुद समझना सीखा।

मन के दुपट्टे में बाँधी गांठे ऐसी–ऐसी कि,
गिरह–दर–गिरह आँख मूँद के खोलना सीखा।

झींगुरों का शोर इतना था गुज़री रात कि,
खामोशी की हथेलियों से कान ढकना सीखा।

तन्हाई में गहराता गया मौन इतना कि,
तंग आकर एक गूंगा बोलना सीखा।

हर सू चेहरे पे नज़रें गड़ाए दुनिया तो,
मुस्कान तले मासूम ग़म दुबकना सीखा।

पलकों के फ़लक पर नूरानी सूरत सजाये,
हर मंज़र की "बानगी" में उसे तलाशना सीखा।



"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।"

–महात्मा गाँधी

बम



विक्रान्त कुमार,
सहा0 लेखाधिकारी

एक सरकारी कार्यालय में विभागीय मुख्यालय से एक पत्र प्राप्त हुआ और सरकारी रीति–रिवाज़ का पालन करता हुआ प्रेषण अनुभाग में प्रवेश कर गया। पत्र प्राप्त होते ही ना जाने कहाँ से प्रेषण अनुभाग में तत्क्षण विचित्र ऊर्जा का प्रवाह हुआ, भूकंप के समय वाली स्थिति उत्पन्न हो गयी, मानो सभी ग्रहों की दिशाएँ अचानक से परिवर्तित हो गयी हों।

प्रेषण अनुभाग को पत्र के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं थी इसीलिए सभी एक–एक करके पत्र को समझने का प्रयास कर रहे थे परन्तु पत्र किस अनुभाग से सम्बंधित है एवं क्या इसका सार है, इसका आकलन नहीं हो पा रहा था, तभी एक अनुभवी कार्मिक ने पत्र का सार ग्रहण किया अर्थात "He read the letter between the lines" एवं उसने पत्र से सम्बंधित अनुभाग के बारे में अपने अधिकारी को अवगत कराया (अर्थात अँधेरे में तीर चलाया)।

प्रेषण अनुभाग ने उक्त पत्र सम्बंधित अनुभाग को तत्क्षण प्रेषित कर दिया। अनुभाग अधिकारी पत्र को देख उसमें ऐसे खो गए जैसे विभागीय परीक्षा की तैयारी के समय सरकारी लेखांकन के नियमों को पढ़कर खो जाते थे। पूरा नियम समझ में आने के उपरान्त भी वस्तुस्थिति अस्पष्ट ही थी, तभी एक वरिष्ठ कर्मचारी की ओर अनुभाग अधिकारी का ध्यान केन्द्रित हुआ एवं अमुक पत्र उन्हीं के नाम रजिस्टर कर दिया गया।

अमुक वरिष्ठ कर्मचारी पत्र को एक सप्ताह तक रोज़ बड़े ध्यान से पढ़ता परन्तु किसी निर्णायक स्थिति पर पहुँच नहीं पा रहा था, इसलिए उसने अपने अनुभाग अधिकारी से पत्र पर चर्चा करने का प्रयास किया परन्तु सब निरर्थक था। सब पत्र से पल्ला झाड़ने का प्रयास कर रहे थे। चर्चा होते–होते पत्र न जाने एक माह में कितने अनुभागों का देशाटन कर पुनः उसी वरिष्ठ कार्मिक के गले मढ़ दिया गया।

"जैसा कि सरकारी नियमों/पत्रों का विशिष्ट गुण होता है कि हर व्यक्ति उनका अलग ही अर्थ निकाल लेता है", हुआ भी ऐसा ही सभी विश्लेषकों ने पत्र के अनेक अर्थ प्रस्तुत कर दिए जिससे अमुक वरिष्ठ कार्मिक की मनः स्थिति और भी दयनीय हो चली थी।

जैसा कहा जाता है अनुभव, ज्ञान पर भारी हो जाता है, वरिष्ठ कार्मिक को जब कहीं से कोई दिशा प्राप्त नहीं हुई तो उसने अपना वरिष्ठ ज्ञान लगा कर एक सूक्ष्म टीप अपने अनुभाग अधिकारी को निम्न अनुसार प्रस्तुत की.....

"Note below may kindly be seen

Matter in the letter, AAO knows better, submitted for approval please".

उक्त टीप को पढ़ने के बाद का दृश्य आप स्वयं परिकल्पित कर सकते हैं। सरकारी पत्र एक बम बन चुका था जो ना जाने कितनों को अपने शब्दों से आहत करने वाली स्थिति में पहुँच गया था।

हास्य के साथ–साथ ज्ञान

"कृपया अपने कार्यों का विस्तृत ज्ञान एकत्रित करने एवं अगली पीढ़ी को उसे प्रेषित करने का उचित प्रयास करें अन्यथा ये पत्र सरकारी के स्थान पर कब गैर–सरकारी हो जाएगा इसका आकलन असम्भव है।"



ईमानदारी से मिली सौगात



दीपा पवार
सहायक लेखाधिकारी

रात भर राजू यह सोचकर सो नहीं पा रहा था कि क्या कल का दिन भी और दिनों की तरह परेशान करने वाला उदासी भरा और बेरूख़ा होगा या कुछ ऐसा होगा कि वह अपनी नन्हीं बहन राधा के चेहरे पर थोड़ी हँसी ला पाएगा।

राजू और राधा के सिर से पिता का साया तो पहले ही उठ गया था, माँ किसी तरह दोनों बच्चों को मेहनत–मजदूरी करके पाल रही थी। 8 साल की नन्हीं उम्र में जब बच्चे खिलौने से खेलते हैं, मां–बाप से नई–नई फरमाईशें करते हैं, राजू गरीबी से, भूख से और तकलीफों से लड़ना सीख रहा था। इस उम्र में उसने दुनियादारी, सुख–दुख को समझना शुरू कर दिया था। गरीबी उसे वक्त से पहले बड़ा कर रही थी। राजू सुबह माँ के साथ एक कंस्ट्रक्शन साइट पर ईंटे और सीमेंट ढोता, तो दोपहर को एक मोची के पास जूते पॉलिश करता। रात के वक्त वह किसी भी दुकान या ठेले वाले का सामान बिकवाता, जिससे दुकानदार उसे कुछ रूपये देने के साथ–साथ खाने–पीने का सामान भी दे देते थे। खाने–पीने की चीजें जब वह घर लाता, तो राधा बहुत खुश होती। उसे लगता मानो उसे कितनी बड़ी खुशी दे दी उसके भाई ने।

राधा भी कम समझदार नहीं थी। वह सब समझती थी। मां की परेशानी, भाई की हाड़–तोड़ मेहनत। इसलिए वह चुपचाप बिना कभी कुछ मांगे आसमान तले भाई का हाथ पकड़े, मां से चिपके नींद की आगोश में चली जाती। पर उस रात राजू को नींद नहीं आ रही थी। अगली सुबह राखी का दिन था और राजू के पास अभी बमुश्किल 50 रूपये भी जमा नहीं हो पाए थे । होते भी कैसे मोची से जो पैसे मिलते थे, वह तो वह माँ को दे देता था, कुछ पैसे बचाता तो राधा के लिए कुछ न कुछ ले जाने का उसका जी करता। पर ये भी रोज कहाँ हो पाता था। चाँद को निहारते–निहारते वह इसी उधेड़बुन में था कि अपनी इकलौती नन्हीं बहन को कल वह ऐसा क्या दे कि राधा खुश हो जाए। देखते–देखते रात का तीसरा पहर शुरू हो गया था पर राजू सोच–विचार में ही डूबा था। उसे पता ही नहीं चला और उसकी आँख लग गई।

सुबह उठते ही रोज की तरह माँ काम पर जाने के लिए राजू पर चिल्लाते सुनाई दी। राधा को भी जल्दी से उठाकर माँ ने हाथ–मुँह धोया और उसके थैले में दो रोटी और प्याज रख दी। राजू से कहा कि बहन को साथ ले आना, आज मुझे जल्दी जाना है। उदास राजू उठा, मुँह हाथ धोया और राधा का हाथ पकड़े साइट की तरफ चल दिया।

अचानक उसे याद आया कि मोची चाचा ने उसे सुबह से ही बुलाया था क्योंकि आज उन्हें अपनी बहन के यहाँ राखी बँधवाने जाना था। तो राधा का हाथ पकड़े वह सीधा मोची चाचा के ठिकाने पर पहुँच गया। जाकर उसने सामान जमाया और राधा को पास बैठने का इशारा किया दोनों भाई–बहन ग्राहक के आने का इंतजार करने लगे।

करीब एक घण्टे बाद एक गाड़ी उनके सामने आकर रूकी। उसमें से बेशकीमती कपड़े पहने एक साहब उतरे और राजू की तरफ अपने मँहगे जूते बढ़ा दिए। राजू समझ गया और बिना कुछ पूछे जूतों पर पॉलिश लगाकर चमकाने में जुट गया। साहब ने वक्त काटने के लिए जेब से मोबाइल निकाला और बहन को फोन लगाकर देर से पहुँचने के लिए माफी माँगी, बोले बस थोड़ी ही देर में पहुँच रहा हूँ। उन्हें पता भी नहीं चला कि कब रू0 1000/– का नोट उनकी जेब से निकलकर जमीन पर आ पड़ा। राजू अपना काम पूरी लगन और ईमानदारी से कर रहा था। उसे आभास हो रहा था कि क्या पता साहब उसे जूते अच्छे से चमकाने पर खुश होकर कुछ बख्शीश ही दे दें, जो मोची चाचा की नहीं, उसकी होगी, जिससे वह राधा को राखी बँधवाते वक्त कुछ दे पाएगा। इसी उम्मीद से भूखे–पेट वह जूतों पर अपनी जोर–आजमाइश करने में लगा था। इधर अचानक राधा का ध्यान रू0 1000/– के नोट पर पड़ा। उसने नोट उठाकर भाई को दे दिया। राजू को इतनी समझ थी कि 1000 रू0 का नोट है, पढ़ा लिखा नहीं था, लेकिन काम करते–करते नोटों की पहचान और उनकी कीमत उसे समझ आ गई थी। नोट पकड़ते ही उसने साहब की तरफ देखा, तो साहब अब भी अपनी बहन से उसकी पसंद पूछ रहे थे, जो वह उसे तोहफे में देना चाहते थे। राजू ने उन्हें देखा, फिर राधा की तरफ देखा। फिर पता नहीं क्या सोचकर नोट साइड में रखकर अपना काम खत्म किया। उसने साहब को आवाज दी की जूते तैयार हैं, पहन लीजिए।



साहब ने चमचमाते जूते देखकर लम्बी सी मुस्कान दी और राजू से पूछा कितने पैसे हुए, राजू ने 50 रू0 बताया। साहब ने 100 रू0 का नोट निकालकर राजू को दिया तो राजू ने 1050 रू0 उनकी तरफ बढ़ा दिये। साहब को हैरानी हुई कि क्या दे रहे हो, पढ़े–लिखे नहीं हो क्या ? राजू ने जवाब दिया, "साहब, पढ़ा लिखा नहीं हूँ पर नोट का रंग पहचानता हूँ। यह आपकी ही जेब से गिरा है, जिसे मेरी बहन ने उठा लिया था"। साहब को राजू की ईमानदारी बहुत पसंद आई। उसने राजू से उसकी उम्र पूछी। जानकर उसे दुख हुआ कि 8 साल का बच्चा छोटी बहन को साथ लिए इतनी मेहनत कर रहा है। उसने राजू को वह नोट रखने को कहा और कहा कि– "आज राखी का दिन है, यह नोट तुम दोनों ने मिलकर कमाया है। आज अपनी बहन को उसकी पसंद का कोई

तोहफा दिलाओ, ताकि तुम दोनों के लिए यह रक्षा बंधन खास हो जाए।"

राजू ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। तो साहब ने राधा की तरफ एक राखी बढ़ाई और बोले, कार में मेरा बेटा बैठा है, तुम उसे जाकर यह राखी बाँध दो। दो साल में ही हमने अपनी प्यारी बेटी को एक गंभीर बीमारी के कारण खो दिया था। वह होती, तो तुम्हारे बराबर ही होती। इस पर राधा ने राजू की तरफ देखा, तो राजू फिर ना नहीं कर सका। राधा ने कार में बैठे साहब के बेटे की, जो चल नहीं सकता था, अपंग था, कलाई पर राखी बाँध दी। साहब ने गाड़ी में रखा मिठाई का डिब्बा और भेंट स्वरूप वह रू0 1000 का नोट राधा को थमा दिया। ढेर सारा आशीर्वाद देकर साहब ने कार आगे बढ़ा दी।

अब तो राजू की खुशी सातवें आसमान पर थी। आज उसने राधा को नहीं बल्कि राधा ने उसे राखी का तोहफा दे दिया था। रक्षा बंधन का यह दिन दोनों भाई बहनों के लिए बहुत ही खास बन गया था। राजू ने आगे बढ़कर राधा को गले से लगा लिया। दोनों के चेहरों पर खिलखिलाहट थी। राधा को भी अहसास था कि कुछ बहुत अच्छा दोनों के साथ हुआ है। वह झट से भाई के गले लग गई। देर तक दोनों एक दूसरे को गले लगाए रहे और मुस्कुराते–हँसते रहे। उनकी आंखों में खुशी की चमक थी और चेहरे पर ईमानदारी के गर्व का नूर था।



"भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।"

– नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की स्थिति एवं भविष्य



प्रभात कुमार द्विवेदी
खंडीय लेखाकार

डॉ बी0आर0 अंबेडकर द्वारा नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के महत्व को उजागर करते हुए कहा गया है – ''मेरी राय है कि यह गणमान्य व्यक्ति या अधिकारी शायद भारत के संविधान में सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी है। यह एक ऐसा व्यक्ति है जो देखेगा कि वास्तविक व्यय संसद द्वारा मतदान किए गए खर्चों से अधिक न हो, या जो निर्धारित किया गया है उससे अलग न हो।''

डॉ बी.आर. अंबेडकर द्वारा इस प्रकार नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

1857 की क्रान्ति के बाद जब ब्रिटेन ने भारत पर प्रत्यक्ष शासन स्थापित किया तो भारत में कई प्रशासनिक परिवर्तन किये। उनमें से एक था–वायसराय की कार्यकारी परिषद के वित्तीय सदस्य द्वारा भारत के बजट को तैयार करना। विल्सन को वायसराय लॉर्ड कैनिंग की परिषद में वित्त सदस्य नियुक्त किया गया था और उन्होंने 1860 में भारत का पहला बजट पेश किया। इस बजट का अनुपालन सुनिश्चित कराने के लिए लेखापरीक्षक के पद का गठन किया गया। 1860 में सर एडवर्ड ड्रमंड को प्रथम महालेखापरीक्षक नियुक्त किया गया। यद्यपि यह संस्था तब सरकार के आधीन थी। भारत सरकार अधिनियम 1919 के तहत, महालेखापरीक्षक सरकार से स्वतंत्र हो गया।

भारत सरकार अधिनियम 1935 ने संघीय व्यवस्था में प्रांतीय महालेखापरीक्षक की व्यवस्था करके महालेखापरीक्षक की स्थिति को और मजबूत किया। आज़ादी के बाद, 1950 के भारतीय संविधान के अनुच्छेद 148 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त नियंत्रक और महालेखापरीक्षक का प्रावधान था। 1971 में केंद्र सरकार ने नियंत्रक और सेवा की शर्तें, अधिनियम, 1971 लागू किया। इस अधिनियम ने नियंत्रक और महालेखापरीक्षक को केंद्र और राज्य सरकारों के लिए लेखांकन और लेखा परीक्षक कर्तव्यों के लिए जिम्मेदार बना दिया। यद्यपि 1976 में नियंत्रक और महालेखापरीक्षक को लेखांकन कार्यों से मुक्त कर दिया गया।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
''लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा''
Dedicated to Truth in Public Interest"

नियंत्रक और महालेखापरीक्षक भारत में सरकार की लोकतांत्रिक प्रणाली के मजबूत स्तंभों में से एक है। वह सार्वजनिक धन के मुख्य संरक्षक हैं। यह वह संस्था है जो सरकार और अन्य सार्वजनिक प्राधिकरणों (वे सभी जो सार्वजनिक धन खर्च करते है)

की संसद और राज्य विधानमंडलों के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित करता है। नियंत्रक और महालेखापरीक्षक भारत की संचित निधि, प्रत्येक राज्य की संचित निधि और विधानसभा वाले केंद्रशासित प्रदेश के सभी व्यय से संबंधित खातों की लेखापरीक्षा करता है। वह भारत की आकस्मिकता निधि और भारत के सार्वजनिक खाते के साथ–साथ प्रत्येक राज्य की आकस्मिकता निधि और सार्वजनिक खाते से सभी व्यय की लेखापरीक्षा करता है। वह केंद्र या राज्य के राजस्व से वित्तपोषित सभी निकायों और प्राधिकरणों की प्राप्तियों और व्यय का ऑडिट करता है, वह केंद्र के खातों से संबंधित अपनी लेखापरीक्षा रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपता है, जो उन्हें संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखता है। वह किसी राज्य के खातों से संबंधित अपनी ऑडिट रिपोर्ट राज्यपाल को सौंपता है, जो उन्हें राज्य विधानमंडल के समक्ष रखता है।

नियंत्रक और महालेखापरीक्षक को "लोक लेखा समिति" के मार्गदर्शक, मित्र और दार्शनिक के रूप में भी देखा जाता है। नियंत्रक और महालेखापरीक्षक लोक लेखा समिति के ध्यान योग्य सबसे जरूरी मामलों की एक सूची तैयार करके समिति को उसके विचार–विमर्श में सहायता भी करता है।

नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की जिम्मेदारी यहीं खत्म नहीं होती। उसे यह देखना होता है कि उसके द्वारा सुझाया गया सुधारात्मक कदम उठाया गया है या नहीं। जिन मामलों में इसे नहीं लिया गया है, वह मामले की रिपोर्ट लोक लेखा समिति को देता है जो मामले को संसद में उठाती है। लोक लेखा समिति संसद की एक स्थायी समिति है, जिसके अध्यक्ष की नियुक्ति का अधिकार लोकसभा अध्यक्ष को है। 1966–67 तक लोक लेखा समिति के अध्यक्ष की नियुक्ति तत्कालीन सत्ताधारी दल से होती थी, बाद में एक सम्मेलन में निर्णय लिया गया कि समिति का अध्यक्ष अनिवार्य रूप से विपक्षी दल से ही नियुक्त किया जाएगा। समिति के सदस्यों का चुनाव प्रतिवर्ष संसद द्वारा अपने सदस्यों में से किया जाता है। यहाँ एकल हस्तांतरणीय वोट के माध्यम से आनुपातिक प्रतिनिधित्व का सिद्धांत अपनाया जाता है। यह चुनाव पद्धति संसद के सभी सदस्यों को समान प्रतिनिधित्व देती है। इसमें मंत्री का चुनाव नहीं किया जा सकता। समिति में 22 सदस्य हैं। सभी सदस्य भारतीय संसद से लिये गये हैं। 22 सदस्यों में से 15 लोकसभा (निचले सदन) से चुने जाते हैं और 7 सदस्य राज्यसभा (उच्च सदन) से चुने जाते हैं।

"शुद्ध आय" की गणना भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक द्वारा सुनिश्चित और प्रमाणित की जाती है, जिसका प्रमाण पत्र अंतिम है। भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक ने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय का सफलतापूर्वक लेखापरीक्षण किया है जिसमें विविध और जटिल ऑपरेशन शामिल हैं, यह भारतीय सी0ए0जी0 की विश्वसनीयता को दर्शाता है।

वर्तमान समय में लेखापरीक्षा जटिल होती जा रही है क्योंकि भ्रष्टाचार और कुप्रशासन के रूपों का पता लगाना मुश्किल है। जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखकर लेखांकन और लेखापरीक्षा की आवश्यकता है, ताकि सतत् विकास को प्राप्त किया जा सके।

इसके अतिरिक्त श्री विनोद राय (पूर्व नियंत्रक और महालेखापरीक्षक) द्वारा सुझाए गए सुधार निम्न थे– (क) सभी निजी–सार्वजनिक भागीदारी, पंचायती राज संस्थानों और सरकार द्वारा वित्त पोषित समितियों को नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के दायरे में लाएं।

(ख) मुख्य सतर्कता आयुक्त के चयन की तर्ज पर एक नया नियंत्रक और महालेखापरीक्षक चुनने के लिए एक कॉलेजियम प्रकार का तंत्र स्थापित हो।

(ग) जलवायु परिवर्तन से लेकर पीपीपी तक, सरकारी फंडिंग और सार्वजनिक वस्तुओं के दोहन के तरीके में नाटकीय बदलाव हो रहे हैं। इस संदर्भ में सीएजी के लेखापरीक्षा तंत्र में बदलाव हो।

वस्तुतः महालेखापरीक्षक परिवार के सदस्य होने के नाते हम सभी को मिलकर इसे भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास स्थापित करने वाली संस्था के रूप में विकसित करना होगा।



जिन्दगी दो मिनट



प्रशांत जोशी
वरिष्ठ लेखाकार

जिंदगी में दो मिनट कोई मेरे पास ना बैठा,

आज सब मेरे पास बैठे जा रहे हैं..

कोई तोहफा ना मिला आज तक,

और आज फूल ही फूल दिए जा रहे हैं..

तरस गए थे हम किसी एक हाथ के लिए,

और आज कन्धे पे कन्धे दिए जा रहे हैं..

दो कदम साथ चलने को तैयार ना था कोई,

आज काफिले में सब साथ चले जा रहे हैं..

आज चला पता कितनी हसीन थी मौत,

हम यूँ ही जिन्दगी जिये जा रहे हैं..



"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।"

–सुमित्रानंदन पंत

हमारा कार्यालय : इतिहास के आईने में



विनोद कुमार शर्मा
वरि0 लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना 9 नवम्बर 2000 को भारत के 27वें राज्य के रूप में हुई थी। जनवरी 2007 से पूर्व इस राज्य का नाम उत्तरांचल था। पृथक राज्य बनने पर कार्यालय महालेखाकार उत्तरांचल, वर्तमान में उत्तराखण्ड, प्रारम्भ में इलाहाबाद स्थित कार्यालय से ही संचालित होता रहा। उक्त के साथ ही देहरादून में स्थानीय ओबरॉय मोटर्स बिल्डिंग में कार्यालय स्थानान्तरित करने की कार्रवाई तीव्रता से गतिमान रही। वर्ष 2006 में इस कार्यालय का कैडर इलाहाबाद स्थित कार्यालय से पृथक हुआ तथा इसके पश्चात दिसम्बर 2006 से इस कार्यालय में स्थायी विकल्प देने वाले कार्मिकों की प्रोन्नति प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। वर्ष 2006 से पूर्व लेखा एवं हकदारी कार्यालय में लगभग 90 के आसपास स्थायी विकल्प देने वाले कार्मिकों के अतिरिक्त, सभी कार्मिक इलाहाबाद स्थित कार्यालय से 18 माह की अवधि के लिए आने वाले कार्मिक ही कार्यरत थे। वरिष्ठ लेखाधिकारी एवं सहायक लेखाधिकारी संवर्ग में



भी अधिकतर इलाहाबाद स्थित कार्यालय से अस्थायी रूप आने वाले कार्मिक ही कार्यरत थे। प्रारम्भ में लेखा परीक्षा कार्यालय भी ओबरॉय मोटर्स बिल्डिंग से ही कुछ समय तक संचालित होता रहा। बाद में यह कार्यालय इन्दिरा नगर स्थित वैभव पैलेस में स्थानान्तरित हो गया था। ओबरॉय मोटर्स बिल्डिंग में स्थानाभाव की समस्या भी एक बड़ी समस्या थी। इलाहाबाद स्थित कार्यालय से बड़ी संख्या में अस्थायी कार्मिकों के आने पर कई नये अनुभाग बनाये गये लेकिन उन अनुभागों में तैनात कर्मचारियों के बैठने की व्यवस्था करना एक बहुत बड़ी समस्या थी। कार्यालय के ही निर्माण एवं वन लेखा अनुभाग में, जहां पर बाद में आई0टी0एस0जी0 अनुभाग एवं वरिष्ठ लेखाधिकारी कक्ष बनाया गया, मात्र 06 कार्मिकों के बैठने की व्यवस्था थी, उस स्थान पर वर्ष 2004–05 में 36 कार्मिकों को तैनात किया गया था। वास्तव में देखा जाए तो विवशता के कारण सभी कार्मिकों के बैठने की पर्याप्त व्यवस्था करना किराये के उस कार्यालय भवन में लगभग असंभव था। प्रारम्भ में वर्तमान आई0एस0बी0टी0 के आस–पास जहां कार्यालय स्थित था, सुनसान इलाका था। जून 2004 में आई0एस0बी0टी0 का लोकार्पण होने

के बाद से इस क्षेत्र में रौनक बढ़ी इससे पहले सुनसान सड़क पर कार्यालय महालेखाकार के कार्मिक भारी संख्या में जब सड़क पर निकलते थे तो स्थानीय नागरिक भी इतनी भारी संख्या में लोगों को एक साथ देखकर आश्चर्य प्रकट करते थे। ऐसा बताया जाता है कि उस समय में कार्यालय के आस–पास के इलाकों में रहने के लिए किराये का मकान ढूँढना बहुत ही कठिन कार्य था। क्योंकि जो थोड़े–बहुत मकान खाली थे, वे सब इतनी बड़ी संख्या में कार्मिकों के आ जाने के कारण तेजी के साथ भर गये थे। चूँकि इलाहाबाद स्थित कार्यालय से एक साथ इतनी बड़ी संख्या में कार्मिकों को कार्यमुक्त किया गया था, तो देहरादून आने वाले कार्मिकों ने बताया कि लिंक एक्सप्रेस ट्रेन अधिकतर इस कार्यालय के कार्मिकों से ही भरी हुई थी। साथ ही यह भी बताया कि इलाहाबाद स्टेशन पर उक्त कार्मिकों के परिजन एवं मित्र भी बड़ी संख्या में उन्हें विदा करने के लिए आये थे उक्त के कारण वहाँ का दृश्य बड़ा भावुक हो गया था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि ये कार्मिक उत्तरांचल न जा कर लम्बे समय के लिए किसी सुदूर यात्रा पर जा रहे थे। यह सब इलाहाबाद स्थित कार्यालय से आने वाले कुछ मित्रों ने बताया जोकि काफी रोचक था। उनके अनुसार कई कार्मिक तो ऐसे थे जिन्हें पहली बार ट्रेन में यात्रा करने का अवसर मिल रहा था क्योंकि इससे पूर्व कभी भी उन्हें इलाहाबाद जिले से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी थी। इसलिए शायद उनके परिवारजनों को घर से इतनी दूर अपने किसी परिवारजनों के सदस्य या मित्रों को भेजने में इतनी घबराहट महसूस हो रही होगी।

कार्यालय महालेखाकार उत्तरांचल की स्थापना के प्रारम्भ के दिनों में अर्थात् उस अवधि में भी जबकि यह कार्यालय सत्यनिष्ठा भवन इलाहाबाद से संचालित हो रहा था, इस कार्यालय में श्री संदीप सिंह/आई0ए0 एण्ड ए0एस0, वरिष्ठ उप महालेखाकार जोकि बाद में इसी कार्यालय से अक्टूबर 2021 में प्रधान महालेखाकार के पद से सेवानिवृत्त हुए, श्री अमरीक सिंह, वरिष्ठ उप महालेखाकार एवं श्री एस0 जे0 सुल्तान, उप महालेखाकार कार्यरत रहे। देहरादून स्थित कार्यालय में श्री प्रभात चन्द्रा/आई0 ए0 एण्ड ए0एस0 महालेखाकार ने कार्यभार ग्रहण किया, जो कि लेखा एवं लेखा परीक्षा दोनों कार्यालयों का कार्यभार देखते थे। वर्ष 2006 तक चूँकि इस कार्यालय का कैडर इलाहाबाद स्थित कार्यालय से पृथक नहीं हुआ था, अतः उक्त अवधि तक इस कार्यालय के समस्त प्रोन्नति आदि के कार्य एवं तत्सम्बन्धी कार्यालय आदेश इलाहाबाद स्थित कार्यालय से ही जारी होते थे। यहाँ तक कि इस कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों का वेतन भी एक समेकित चैक के माध्यम से इलाहाबाद स्थित कार्यालय से ही आता था। वेतन एवं लेखा कार्यालय की इस कार्यालय में स्थापना होने के पश्चात् से ही इस कार्यालय में कार्यरत् सभी कार्मिकों के वेतन एवं सामान्य भविष्य–निधि से जुड़े मामलों का निपटान इस कार्यालय के स्तर से किया जाना सम्भव हुआ है।

वर्ष 2007 तक कार्यालय में रिकॉर्ड के रख–रखाव की स्थिति, जिसमें स्थानाभाव मुख्य समस्या थी, बहुत अच्छी नहीं थी। समय–समय पर बहुत सारे रिकॉर्ड इलाहाबाद स्थित कार्यालय से स्थानान्तरित होकर आ रहे थे। वर्ष 2008 में कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड के पृथक कार्यालय के रूप में अस्तित्व में आने तथा इस कार्यालय में श्री प्रवीर पाण्डेय, आई0 ए0 एण्ड ए0एस0 के नये महालेखाकार के रूप में तैनाती के पश्चात् इस कार्यालय ने गति पकड़ी।

श्री पाण्डेय ने पत्रावलियों एवं रिकॉर्ड की समुचित व्यवस्था करने पर बहुत बल दिया। उक्त अवधि में गैर–जरूरी एवं अनावश्यक रिकॉर्डस की छँटाई का कार्य युद्धस्तर पर किया गया। श्री पाण्डेय को तत्समय में श्री विश्वनाथ सिंह जादौन, उप महालेखाकार का भी साथ मिला तथा दोनों अधिकारियों ने मिलकर व्यवस्थित तरीके से वी0एल0सी0 के संचालन तथा सामान्य भविष्य निधि के रख–

रखाव में अभिदाताओं की सुविधा के लिए तथा प्रकरणों के त्वरित निपटान के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। इसके पश्चात प्रधान महालेखाकार श्रीमती महुआ पाल ने अपने कार्यकाल में उल्लेखनीय कार्यों की इसी कड़ी को आगे बढ़ाया, परिणामस्वरूप यह कार्यालय व्यवस्थित तरीके से कार्य करने लगा तथा पुराने रिकॉर्ड के रख–रखाव के लिए अन्य भवन किराये पर लेने के कारण रिकॉर्ड की भी समुचित व्यवस्था हो सकी।

सितम्बर–अक्टूबर 2017 तक यह कार्यालय किराये के भवन ओबरॉय मोटर्स बिल्डिंग से ही संचालित होता रहा। इसके पश्चात यह कार्यालय देहरादून स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के अन्य कार्यालयों सहित, अपने नवनिर्मित भवन, 'महालेखाकार भवन' कौलागढ़ में स्थानान्तरित हो गया।

वर्तमान में यह कार्यालय अपने नवनिर्मित भवन में व्यवस्थित रूप से संचालित हो रहा है। अपनी लगभग 20 साल की यात्रा में इस कार्यालय ने काफी मजबूती हासिल कर ली है। ऐसा निश्चित रूप से इस कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अनुभव एवं उनके परिश्रम के परिणामस्वरूप ही संभव हुआ है। आज इस कार्यालय के नये भवन में सुव्यवस्थित रिकॉर्ड रूम है, पत्रावलियों के रख–रखाव की उचित व्यवस्था है, सभागार एवं समिति कक्ष के साथ ही साथ कार्मिकों को प्रशिक्षण देने/आंतरिक परीक्षाओं का आयोजन करने हेतु भी उचित व्यवस्था है।



नवनिर्मित, 'महालेखाकार भवन'

वीडियो गेम–एक आभासी दुनिया



पूजा त्रिपाठी
पत्नी श्री नवीन त्रिपाठी
(सहायक लेखाधिकारी)

आज हर घर में डिजिटल उपकरण मौजूद हैं। जैसे–स्मार्टफोन, कंप्यूटर, लैपटॉप आदि। इन उपकरणों का उपयोग अनेक रूपों में किया जाता है। इनके हमारे जीवन में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रभाव पड़ते हैं। वीडियो गेम भी इसी का एक अभिन्न अंग है।

जैसा कि देखा जा रहा है युवा पीढ़ी का रूझान वीडियो गेम की ओर बढ़ता जा रहा है। बच्चे इस आभासी दुनिया में खोते जा रहे हैं। उन्हें लगता है कि सब कुछ हमारे नियंत्रण में है। इस प्रकार इसके आदी हो रहें हैं कि उन्हें दैनिक जीवन की गतिविधियों का ध्यान भी नहीं रहता है। उन्हें खाने–पीने, बैठने–उठने का ध्यान नहीं रहता है जिससे उनको अनेक समस्याएं होती हैं। शारीरिक ढाँचे में भी परिवर्तन होता है, न ही वो किसी की बातों का ध्यान रखते हैं।



उदाहरण के तौर पर जब माँ बच्चे को ऑन स्क्रीन रहते हुए अपने हाथों से खाना खिलाती है तो बच्चा खाना तो खा रहा होता है लेकिन बच्चे को उसे क्या खिलाया जा रहा है, खाने का स्वाद क्या है या कितनी मात्रा में खाना है, उन्हें इन चीजों का कोई ध्यान नहीं रहता है क्योंकि उसका ध्यान सिर्फ स्क्रीन पर होता है।

अधिकांश बच्चों में चिड़चिड़ापन, झुँझलाहट, सिरदर्द, आँखो की समस्या, हेड फोन का प्रयोग करने से है जिससे कि सुनने की या कान सम्बन्धित समस्या, गर्दन, रीढ़ की हड्डी, अंगुली की छाप भी हल्की होने लगती है।

आज हर घर में डिजिटल उपकरण मौजूद हैं। जैसे–स्मार्टफोन, कंप्यूटर, लैपटॉप आदि। इन उपकरणों का उपयोग अनेक रूपों में किया जाता है। इनके हमारे जीवन में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रभाव पड़ते हैं। वीडियो गेम भी इसी का एक अभिन्न अंग है।

जैसा कि देखा जा रहा है युवा पीढ़ी का रूझान वीडियो गेम की ओर बढ़ता जा रहा है। बच्चे इस आभासी दुनिया में खोते जा रहे हैं। उन्हें लगता है कि सब कुछ हमारे नियंत्रण में है। इस प्रकार इसके आदी हो रहें हैं कि उन्हें दैनिक जीवन की गतिविधियों का ध्यान भी नहीं रहता है। उन्हें खाने–पीने, बैठने–उठने का ध्यान नहीं रहता है जिससे उनको अनेक समस्याएं होती हैं। शारीरिक ढाँचे में भी परिवर्तन होता है, न ही वो किसी की बातों का ध्यान रखते हैं।

ऑन स्क्रीन कई बार बहुत रफ भाषा का प्रयोग भी होता है या विज्ञापन दिखाई देते हैं जो बहुत आसानी से या असमय बच्चे सीख लेते हैं। कई बार अनजान व्यक्ति के संपर्क में भी बच्चे आ जाते हैं।

जहाँ बच्चों में वीडियो गेम से सूझ–बूझ में वृद्धि होती है वहीं इसके ज्यादा उपयोग से बच्चों में असामान्य व्यवहार भी दिखाई देता है।

अतः माता–पिता को एक बार अवश्य विचार करने की आवश्यकता है कि कहीं न कहीं इसका माध्यम हम तो नहीं हैं। बच्चों को व्यस्त रखने के लिए माता–पिता उन्हें स्वयं वीडियो गेम दे देते हैं। इससे माता–पिता और बच्चों के बीच अन्तःक्रिया भी कम होती है। बच्चा किस प्रकार के वीडियो गेम खेल रहा है इसकी जानकारी अवश्य होनी चाहिए।

अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वीडियो गेम शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है। हमें इस काल्पनिक दुनिया से निकल कर वास्तविक जीवन को अपनाने या जुड़ने की आवश्यकता है।



"भारतीय भाषाएं नदियां है और हिंदी महानदी।"

–रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कहाँ नीती, कहाँ माणा...



डॉ0 दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

विचारों की कुशल अभिव्यक्ति के मार्ग में लोकोक्तियों के प्रयोग की महत्ता से हम सभी परिचित हैं। ये लोकोक्तियाँ या कहावतें किसी भी भाषा का अभिन्न अंग होती हैं और उसके सौन्दर्य में वृद्धि करती हैं। बोलचाल की भाषा हो या साहित्यिक और परिनिष्ठित भाषा, सभी जगह कहावत दिख जाती है। अपने वाक्य में प्रयुक्त मूल शब्दों और उनके शाब्दिक अर्थों से परे किसी अन्य अर्थ को प्रतीत कराने की उनकी अद्‌भुत क्षमता उन्हें खास बनाती है। सभी भाषाओं में कहावतों की एक अपनी दुनिया होती है और यह दुनिया हमेशा से ही रोचक रही है। खासतौर पर आंचलिक बोली–भाषाओं में इनके पीछे छिपे किस्से–कहानियाँ इनकी रोचकता में वृद्धि करते हैं।

गढ़वाल हिमालय की दुरूह भौगोलिक परिस्थितियों से उपजी एक ऐसी ही लोकोक्ति है; "कख रैगि नीती कख रैगि माणा, एक स्याम सिंह पट्‌वरिन कख–कख जाणा..." यानि कहाँ तो नीती घाटी और कहाँ माणा घाटी, एक अकेला श्याम सिंह पटवारी कहाँ–कहाँ जाए भला। यूँ तो प्रायः प्रत्येक अधीनस्थ कर्मचारी को अपने जीवनकाल में कभी न कभी इस प्रकार की परिस्थिति का सामना करना ही पड़ता है, जहाँ उन्हें उच्चपदस्थ अधिकारियों से मिलने वाले ऊँचे और अवास्तविक लक्ष्यों, जिन्हें कॉर्पोरेट वातावरण में अनरियल टारगेट कहा जाता है, से दो–चार होना पड़ता है। अपनी कार्यक्षमता से बाहर के इन लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रति शंकित होकर मन में एक झुँझलाहट–सी होती है। लेकिन इस कहावत के पीछे की कहानी को जानने के बाद जब कभी हम ऐसी परिस्थितियों से घिरेंगे तो यकीनन अपनी शारीरिक अथवा मानसिक थकावट को श्याम सिंह की परेशानी के मुकाबले नगण्य पायेंगे। यहाँ बात तो कहावत की हो रही है लेकिन इसका दायरा महज भाषा और भाषाविज्ञान की परिधि तक सीमित नहीं है बल्कि यह खुद में भूगोल, इतिहास, लोक–प्रशासन और सैन्य विज्ञान जैसे तमाम गूढ़ विषयों को समेटे हुए है।



नीती गाँव

ये लगभग 120 बरस पुरानी बात है। उन दिनों भारत पर अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेजी सरकार ने भू–अभिलेखों के रख–रखाव और भू–राजस्व यानी लगान की वसूली के लिए जगह–जगह रेवेन्यू इन्स्पेक्टर यानी राजस्व निरीक्षक तैनात किये थे, जिन्हें उत्तर भारत में हम पटवारी के नाम से भली–भाँति जानते हैं। एक–एक पटवारी के राजस्व सर्किल में दर्जनों गाँव होते थे। इधर संयुक्त प्रान्त यानी यू0पी0 के पहाड़ी इलाकों में, यानी आज के उत्तराखण्ड राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों में 'राजस्व पुलिस' प्रणाली भी चलन में थी। इस प्रणाली के अंतर्गत सुदूर और दुर्गम इलाकों में सिविल पोलिसिंग का काम भी राजस्व विभाग के कार्मिकों के जिम्मे रहता था। उत्तराखण्ड के कुछ जिलों में यह प्रणाली आज भी है, जिसे पूरे एशिया में केवल यहीं पर देखा जा सकता है। हाल ही में राज्य सरकार ने इस प्रणाली को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने की योजना बनाई है।

आज के चमोली और रुद्रप्रयाग जिले उन दिनों पौड़ी जिले का हिस्सा थे और पौड़ी में कुमाऊँ कमिश्नरेट की डिप्टी कमिश्नरी स्थापित थी, जहाँ से अंग्रेज अफसर ब्रिटिश गढ़वाल पर नजर रख सकते थे। आजादी के बाद टिहरी रियासत के विलय के साथ टिहरी और उत्तरकाशी जिले भी इसका हिस्सा बने और अब हरिद्वार और देहरादून जिलों के साथ यह कुमाऊँ से अलग गढ़वाल कमिश्नरी के रूप में कार्यशील है। चूँकि सीमान्त क्षेत्र की नीती और माणा घाटियों का प्रशासनिक नियन्त्रण इसी डिप्टी कमिश्नरी से होता था और इसलिए नीती–माणा नाम का राजस्व सर्किल इस डिप्टी कमिश्नरी के अधीन था। यह आकार की दृष्टि से ब्रिटिश भारत के संयुक्त प्रान्त का सबसे बड़ा राजस्व सर्किल था। नीती और माणा हिमालय की घाटियाँ हैं जहाँ से होकर गुजरने वाले दर्रे तिब्बत से व्यापार का पारम्परिक मार्ग हुआ करते थे। यहाँ नीती–माणा को एक साथ लिख देने से भले ही इनके आसपास होने का अहसास हो रहा हो, लेकिन सच यह है कि आज मोटर–मार्ग के विकसित होने के बावजूद भी माणा जोशीमठ से 45 किलोमीटर दूर है जबकि नीती जोशीमठ से दूसरी दिशा में 85 किलोमीटर की दूरी पर है। उन दिनों नीती और माणा की यह दूरी पैदल या घोड़ा मार्ग से डेढ़ सौ किलोमीटर से अधिक थी। नीती से माणा के बीच फैले विस्तृत भू–भाग के दर्जनों गाँवों से राजस्व एकत्रित करने का जिम्मा जिस पटवारी के पास था, उनका नाम था। श्याम सिंह नयाल।यह मध्य एशिया में अपने दबदबे को लेकर ब्रिटिश और सोवियत संघ के बीच चल रहे 'द ग्रेट गेम' यानी बड़े खेल के अवसान का दौर था। इसी खेल के बीच ब्रिटिश भारत के तत्कालीन वायसराय जॉर्ज कर्जन ने 1903 में तिब्बत की अकूत स्वर्ण सम्पदा को कब्जाने के इरादे से तिब्बत पर हमले की योजना बनाई। उनका इरादा माणा दर्रे से होकर तिब्बत पर आक्रमण करने का था, इसलिए हमले से पहले वाइसराय इस इलाके को देख लेना चाहते थे। इस आशय की सूचना उनके दफ्तर से जब कुमाऊँ के कमिश्नर को मिली तो उन्होंने पटवारी श्याम सिंह को एक पत्र लिखकर नीती–माणा का दौरा करके वहाँ की ग्राउण्ड रिपोर्ट तीन दिनों के भीतर भेजने को कहा। जब श्याम सिंह ने यह चिट्ठी पढ़ी तो उनके मुँह से अनायास ही निकला "कख रैगि नीती कख रैगि माणा, एक स्याम सिंह पट्वरिन कख–कख जाणा..." चूँकि यह बात सीधे श्याम सिंह के दिल से निकली थी शायद इसीलिए लोकभाषा के इन सीधे–सपाट शब्दों ने एक कहावत का रूप धारण कर सहजता से अमरत्व प्राप्त कर लिया।

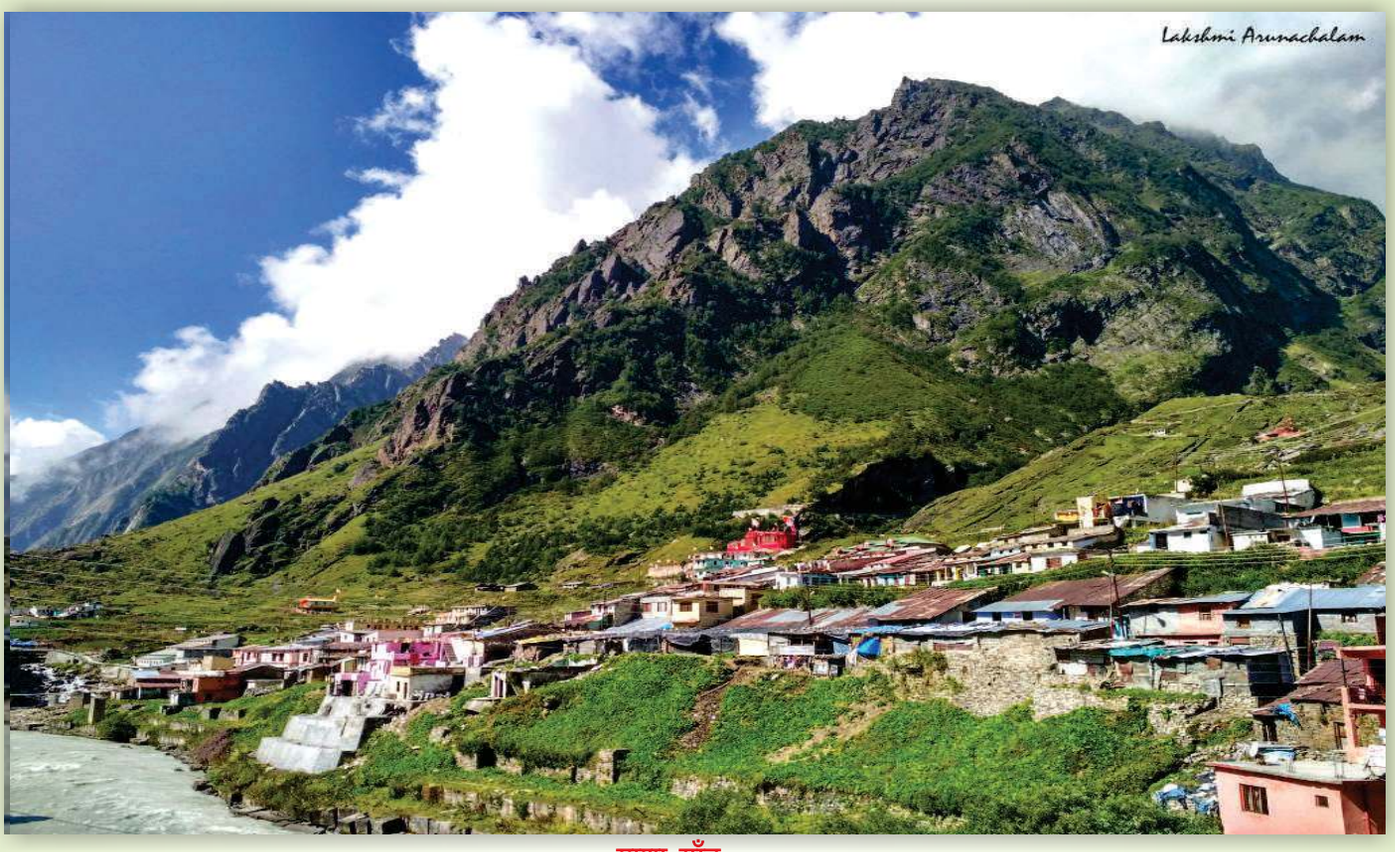
बस तब से ही पटवारी श्याम सिंह की कही बात चल निकली और आज भी पहाड़ के लोग, खासकर सरकारी महकमों के मुलाजिम, अपनी क्षमता से अधिक काम को सामने देखकर अपनी झुँझलाहट श्याम सिंह के इन्हीं शब्दों को दोहराते हुए व्यक्त करते हैं। गढ़वाल में इस लोकोक्ति को इतनी प्रसिद्धि प्राप्त हुई कि इससे जुड़े रोचक किस्से को स्थानीय गीतों में भी स्थान मिला–

"कख रैगि नीति कख रैगि माणा,

एक स्याम सिंह पट्वरिन कख–कख जाणा,

चमोलीमा परसिद्ध तेरी औखाणा,

एक स्याम सिंह पट्वरिन कख–कख जाणा..."



माणा गाँव

खैर, अपनी झुँझलाहट और रास्ते की तमाम दुशवारियों के बावजूद पटवारी श्याम सिंह ने नीती–माणा इलाके का दौरा किया और सौंपा गया काम पूरा करके कमिश्नर को रिपोर्ट भेजी। फिर कर्जन लाव–लश्कर के साथ भ्रमण के लिए यहाँ पहुँचे। यहाँ के लगभग दो सौ किलोमीटर के जिस रास्ते को कर्जन ने पैदल चलकर या खच्चरों के जरिए तय किया, उसे तब से कर्जन ट्रेल के नाम से जाना जाने लगा। बाद में अंग्रेजों ने तिब्बत पर हमला किया और युद्ध भी जीता। यह अलग बात है कि हमला माणा के रास्ते से न होकर सिक्किम के रास्ते हुआ। खैर, कुछ भी हो, पटवारी श्याम सिंह इस कहावत के साथ अमर हो गए।

(प्रामाणिक पुस्तकों तथा जन–श्रुतियों के आधार पर)

मातृभाषा का सम्मान



विनोद कुमार शर्मा
वरि0 लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

हिंदी हमारी मातृ भाषा

हिंदी हमारी राजभाषा

आओ हिंदी का करें सम्मान

करें रक्षा संस्कृति की अपनी

बढाएं हिंदी का मान।

मातृ भाषा ही तो है

अभिव्यक्ति का स्वाभाविक माध्यम

दिल से अपनाएँ इसको

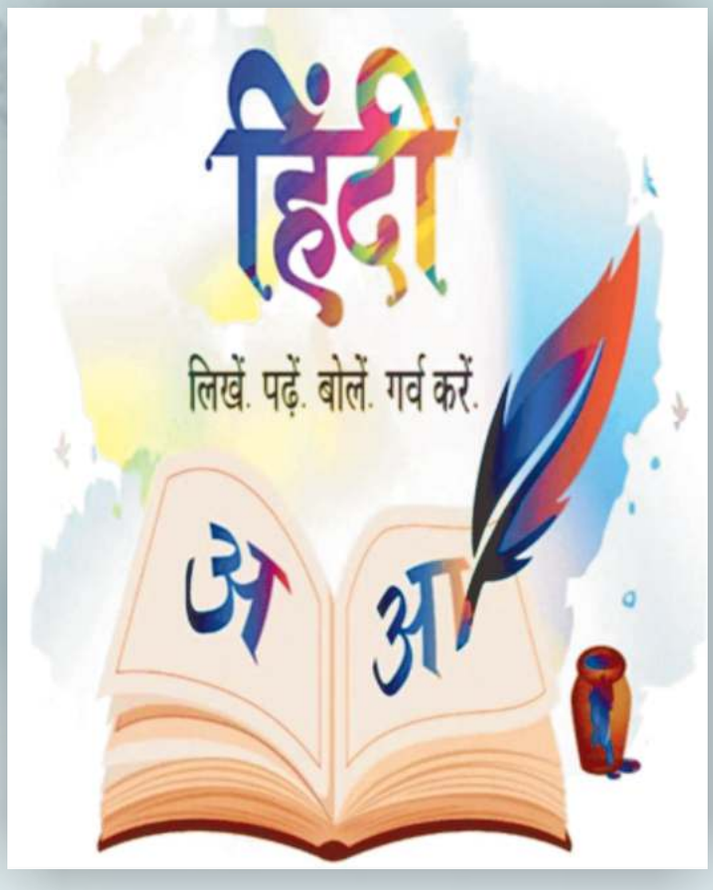
करें मां का सम्मान

बढ़ाएं हिंदी की शान

हिंदी हमारी मातृभाषा

हिंदी हमारी राजभाषा

आओ हिंदी का करें सम्मान।



शिक्षा का माध्यम बनें

हमारी मातृभाषाएं

प्राथमिक से लेकर

उच्च शिक्षा तक

हो मातृभाषा में ज्ञान

हिंदी हमारी मातृ भाषा

हिंदी हमारी राजभाषा

आओ हिंदी का करें सम्मान।

प्रबंधन,

मेडिकल शिक्षा,

तकनीकी शिक्षा से लेकर

प्रतियोगी परीक्षाओं तक

हो मातृभाषा में ज्ञान

नई शिक्षा नीति का

यही तो है फरमान

हिंदी हमारी मातृभाषा

हिंदी हमारी राजभाषा

आओ हिंदी का करें सम्मान।



हम सब मिलकर

करें यह प्रण आज

मातृभाषा को अपनाएंगे अपनी

देकर उसको मान

हिंदी हमारी मातृभाषा

हिंदी हमारी राजभाषा

आओ हिंदी का करें सम्मान।

प्रकृति व बेबस इंसान



प्रशांत जोशी
वरिष्ठ लेखाकार

प्रकृति ने फिर अपना रौद्र रूप दिखाया है।

चारों तरफ सब बिखरा–बिखरा नज़र आया है।।

देखो सब ओर छाया पानी ही पानी है।

फिर भी आदमी हर बार करता नादानी है।।

चारों तरफ सब ओर कोहराम छाया है।

देखो इंसान फिर बेबस नज़र आया है।।

कब इंसान सुधरेगा, कब समझ पायेगा।

प्रकृति तो जननी है उससे कहाँ जीत पायेगा।।



हर–हर महादेव



विक्रान्त कुमार,
सहा0 लेखाधिकारी

सृष्टि के कण–कण में वो, बहते समय के हर क्षण में वो
काल चक्र से परे है जो, महाकाल मेरा शंकर वो।।
गण–प्रेत हैं चाकर जिसके, नन्दी पर सवार है वो
तत्वों को साधे है जो, भूतेश्वर महादेव है वो।।
गल कंठ वासुकी बैठे, भस्म रमाये औघड़नाथ है वो,
तीन लोक धारण किये, त्रिशूल धारी आशुतोष है वो।।
नट कर नटराज बने, वीरभद्र और विश्वेश्वर वो
अहंकार का संहार करे जो, रूद्र रूप आदिनाथ है वो।।
ऊर्जा का संचार करे जो, डमरू धारी भोलेनाथ है वो
पापों का नाश करे जो, गंगाधर महायोगी है वो।।
मृत्यु को भी मार सके जो, महामृत्युंजय सर्वेश्वर वो
त्रिलोचन को धारण किये है, सोमेश्वर, श्रीकांत है वो।।
उमापति, त्रिपुरारी है, स्वयभूं और शूलीन भी वो
पशु प्रेम करता है जो, पशुपतिनाथ और प्रणव वो।।
हलाहल का सेवन करे, नीलकंठ महादेव है वो
कैलाशपति, महेश है वो, भैरव भी और चंद्रशेखर वो।।



"हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।"
–स्वामी दयानंद

अनुवाद में भाषायी सौंदर्य का महत्व



महिमानंद भट्ट,
प्रवक्ता (सेवानिवृत्त)

सरकारी कामकाज में अनुवाद

अक्सर कहा जाता है कि अनुवाद की भाषा सरल होनी चाहिए किन्तु यह नियम सभी विषय के अनुवाद पर समान रूप से लागू नहीं हो सकता। एक राजभाषा अधिकारी के रूप में मैं कह सकता हूँ कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों की भाषा सरल नहीं हो सकती, हाँ तकनीकी शब्दावली होने के कारण कुछ हद तक सरल पर्यायवाची शब्द लिए जा सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवाद की भाषा विषयानुकूल आसान या सरल होती है। भाषा में सरलता लाने के लिए भाषा संबंधी विशेषताओं के चयन के साथ अनुवादित सामग्री को



स्पष्ट और छोटे एवं सरल वाक्य में कहना एवं अनावश्यक बातों को न तो जोड़ना और न ही दोहराना चाहिए। अनुवाद में प्रयोग की गई जटिल एवं बोझिल भाषा सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में सफल नहीं हो सकती। वर्तमान समय में केन्द्रीय एवं हिन्दी भाषी राज्य सरकारों के कार्यालयों में व्यापक पैमाने पर अनुवाद कार्य हो रहा है। कारण यह है कि राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976 की व्यवस्थाओं तथा राजभाषा संबंधी आदेशों के अनुसार अनेक कार्यों में हिन्दी और अंग्रेजी का प्रयोग अथवा केवल हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य किया जाना। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अनुसार चौदह प्रकार के जैसे– सामान्य आदेश, नियम, संकल्प, संविदाएं, करार, अधिसूचनाएं, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञा–पत्र, प्रेस–विज्ञप्तियां, प्रशासनिक रिपोर्ट, निविदा सूचनाएं, प्रशासनिक प्रतिवेदन तथा संसद में प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्ट एवं अन्य कागजात जो अनिवार्य रूप से द्विभाषी जारी किये जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त विज्ञापनों, हिन्दी भाषी राज्यों को भेजे जाने वाले पत्रों, तारों आदि को हिन्दी में ही भेजना आदि व्यवस्थाएं करना।

सरकारी नीति के अनुसार कार्यालय में सरल– सुबोध हिन्दी का प्रचलन करके इसकी प्रक्रिया तेज की जानी है। सरकारी अनुवाद मुख्यतः हिन्दी और अंग्रेजी दो भाषाओं से सम्बन्धित है इसलिए अनुवाद करते समय दोनों भाषाओं की प्रवृत्ति एवं अभिव्यक्ति को पहचानना अत्यावश्यक है अन्यथा असावधानी से अनुवाद का मूल उद्देश्य तहस–नहस होकर हिन्दी के बारे में अनेक भ्रान्तियां पैदा हो सकती हैं जैसे हिन्दी के प्रतिवेदन, आवेदन, अभ्यावेदन आदि शब्दों की भाषाभिव्यक्ति को पहचान कर उचित पर्याय प्रयोग करना चाहिए इसी प्रकार अंग्रेजी के Termination, Removal तथा Discharge आदि शब्दों की प्रकृति को सही परिप्रेक्ष्य में समझना होगा। महत्वपूर्ण शब्दों, वाक्यांशों तथा पद–विन्यासों के लिए विभिन्न कार्यालयों में समान पारिभाषिक शब्दावली तथा नीति प्रचलित है, अतः उसका ही प्रयोग अनुवाद कार्य में किया जाए तो उत्तम है। शब्दों की सही पकड़ और सूझ–बूझ का होना भी अनुवाद कार्य के लिए नितान्त आवश्यक है।

अनुवाद एवं भाषायी सौंदर्य

यह प्रायः विदित है कि अभी कार्यालयों में विभिन्न दस्तावेजों के प्रारूप पहले अंग्रेजी में तैयार किये जाते हैं और वरिष्ठ अधिकारी के अनुमोदन के पश्चात् उनका हिन्दी अनुवाद किया जाता है। प्रायः यह अनुवाद नवनिर्मित शब्दावली का सहारा लेते हुए अंग्रेजी की प्रवृत्ति के अनुसार किया जाता है, जबकि उसे मूल प्रारूप के रूप में करना चाहिए न कि मात्र अनुवाद के रूप में। ऐसा अनुवाद करने का कारण संभवतः यह भी है कि अनुवाद यह महसूस करता है कि कहीं उसका अधिकारी उसे यह न कहे कि अमुक शब्द या वाक्यांश का या तो अनुवाद छोड़ दिया है या उसका सिर्फ भाव प्रकट किया गया है जिससे अनुवाद कृत्रिम, अस्वाभाविक एवं बोझिल बन जाता है।

उदाहरणार्थ :

“ The undersined is directed to refer to your letter No.----------dated------regarding ----------and to say that----------“

"अधोहस्ताक्षरी को आपके दिनांक.....के पत्रांक.....का संदर्भ देने और यह कहने का निर्देश हुआ है कि ....."

यदि उपर्युक्त का अनुवाद इस तरह किया जाए तो अधिक सरल और सुबोध होगा।

"आपके पत्रांक.....दिनांक.....के संदर्भ में निवेदन है कि ....."

कार्यालय में हिन्दी अनुवाद के लिए अधिकतर सामग्री अतिशीघ्र प्रकार की होती है इसलिए अनुवाद प्रायः जल्दबाजी में होने के कारण उसकी भाषा कठिन हो जाती है फलस्वरूप चाहते हुए भी अच्छा अनुवाद नहीं हो पाता। कई बार ऐसा भी होता है कि एक ही अनुवाद सामग्री विभिन्न अनुवादकों में वितरित की जाती है जिससे पुनरीक्षण के अभाव एवं अन्य कारणों से उसमें एकरूपता नहीं आ पाती। अनुवाद कार्य में शब्दकोष पर निर्भर रहकर जो अनुवाद किया जाता है यदि उसमें भी सावधानियां न बरती गईं तो अनुवाद अर्थ का अनर्थ होने से हास्यास्पद भी हो जाता है जैसे "कृषि विज्ञान" में "Plant" का सामान्य अर्थ "पौधा" है किन्तु इंजीनियरी में इसे संयंत्र कहते हैं। यदि "Atomic Power Plant" के लिए कोई "आणविक शक्ति संयंत्र" के स्थान पर "आणविक संयंत्र पौधा" लिख दे

तो अर्थ कहीं से कहीं पहुँच जाएगा। इस प्रकार "बैंकिंग" में एक बहुप्रचलित शब्द है "सिक्योरिटी" जिसका अनुवाद कोई भी व्यक्ति हिन्दी में "सुरक्षा" करेगा किन्तु बैंकिंग के संदर्भ में "सिक्योरिटी" का अर्थ समझकर जमानत के रूप में "प्रतिभूति" होगा। यह स्थिति एक नहीं उन कई शब्दों के साथ है जिनका शाब्दिक अनुवाद होता है। अंग्रेजी का एक अन्य शब्द है "Pay" जिसका शब्दानुसार "भुगतान" अथवा "वेतन" होता है किन्तु बैंकिंग में इसे पूरे वाक्य "भुगतान करें" के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस तरह शाब्दिक अनुवाद से कभी–कभी उलझनें भी पैदा हो जाती हैं जिन पर ध्यान देने की जरूरत है।

एक बात यह भी है कि अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं के जो शब्द आम–प्रचलन या जन–सामान्य की भाषा में घुल–मिल गए हैं उन्हें ज्यों का त्यों या थोड़ा हिन्दीकरण के साथ प्रयोग में लिया जाना अच्छी बात है जैसे "रेल" का पर्यायवाची हिन्दी में भी 'रेल' है लेकिन लैनटर्न का "लालटेन" तथा "एकेडेमी" का "अकादमी" हो गया। फार्म, टेलीफोन, कम्पनी, शेयर, रजिस्टर, आर्डर, नोटिस आदि को ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है लेकिन "चैक" के लिए "धनादेश" और एजेन्ट के लिए "अभिकर्ता" आदि के प्रयोग से भाषा बनावटी लगेगी। इसके साथ ही जो शब्द हिन्दी की प्रकृति से मेल नहीं खाते उन्हें स्वीकारना भी उचित नहीं, जैसे बजट के लिए 'आय–व्यय–पत्र' आदि। इसी सन्दर्भ में कुछ अन्य उहारण देखें जा सकते हैं।

अंग्रेजी का एक वाक्य है **"To give blank cheque"** जिसका शब्दशः हिन्दी अनुवाद होगा "कोरा चैक देना" जो भाषायी पकड़ की दृष्टि उचित नहीं है इसके लिए 'पूरी छूट देना' अथवा 'खुली छूट देना' सही अनुवाद होगा। इसी प्रकार "It was raining cats and dogs" का शब्दानुसार किया जाए तो होगा– "बिल्ली और कुत्तों की वर्षा हो रही थी" जो एकदम गलत अनुवाद है जबकि "कैट्स एण्ड डाग्ज" का मतलब यहां पर एक के पीछे दूसरा अर्थात् निरन्तर वर्षा से है जिसे "मूसलाधार वर्षा" से अभिव्यक्त किया जा सकता है। अतः सही अनुवाद होगा "मूसलाधार वर्षा हो रही थी।"

कई बार एक ही शब्द का अलग–अलग प्रचलन भी देखा गया है जैसे अंग्रेजी का " वाइस–चेयरमैन" शब्द (Vice- Chairman) है। आमतौर पर इसके लिए "उपाध्यक्ष" या "उप–सभापति" दो शब्दों का प्रयोग किया जाता है किन्तु कहीं–कहीं अनुसभापति का प्रयोग भी देखा गया है जो प्रचलन तथा अर्थ दोनों दृष्टियों से उचित नहीं लगता। इसी प्रकार "वेरिफिकेशन" "Verification" के लिए "सत्यापन" उचित शब्द है लेकिन "पड़ताल", "जांच" और "परीक्षा" आदि का प्रयोग भी देखने में आया है। अब "अनपार्लियामेंटरी" **"Unparliamentary"** शब्द को ही देखें, इसके लिए "असंसदीय" का प्रयोग एकदम उचित है किन्तु "अशिष्ट" तथा "असभ्य" का प्रचलन होता है।

अतः "अनपार्लियामेंटरी लैंग्विज के लिए "अशिष्ट" तथा "असभ्य भाषा" की जगह "असंसदीय भाषा" का प्रयोग उपयुक्त लगता है। इसी प्रकार अंग्रेजी के "टाइम–बार्ड" (Time-barred) शब्द के लिए भी "काल–बाधित" "कालावरोधित" "काल–तिरोहित" आदि क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग देखा गया है जबकि इसके लिए "कालातीत" सर्वमान्य शब्द है। अंग्रेजी के "जोन" (Zone) शब्द के साथ भी यही स्थिति है इसके लिए अंचल, परिक्षेत्र के अलावा खंड, कटिबंध आदि का प्रयोग भी होता है लेकिन "कटिबंध" वैसे भी 'भौगोलिक शब्द' है प्रशासनिक दृष्टि से "अंचल" उपयुक्त शब्द है। अतः 'जोनल ऑफिस' के लिए "आंचलिक कार्यालय" तथा "जोनल कौंसिल" के लिए "आंचलिक परिषद्" लिखना उपयुक्त लगता है। आशय यह है कि शब्दों का चयन सटीक होना चाहिये तथा उसमें असमंजस की स्थिति बिल्कुल नहीं होनी चाहिए।

अनुवादः श्रमसाध्य कार्य

कहा जाता है "लेखक होना आसान है किन्तु अनुवादक होना अत्यन्त कठिन"। वास्तव में अुनवाद का रास्ता अनेक कंटरीली झाड़ियों से भरा ऐसा बीहड़ रास्ता है जिस पर बहुत सावधानी से चलना पड़ता है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने भी अनुवाद कार्य के विषय में कहा था–"एक प्रकार से मौलिक लेख लिखना आसान है पर दूसरी भाषा से अनुवाद करना बहुत कठिन होता है।" पंडित जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में "ईमानदारी से किए गए शाब्दिक अनुवाद में सभी कुछ होगा सिर्फ आत्मा की ही कमी रहेगी"। द्विभाषिक प्रक्रिया होने के कारण अनुवाद में दोहरी सतर्कता बरतनी पड़ती है इसलिए इसे एक कला के अलावा विज्ञान का कार्य भी कहा जा सकता है और यह एक श्रमसाध्य कार्य तो है ही।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि अनुवाद के कारण राजभाषा हिन्दी को सम्पन्नता और शक्ति प्रदान हुई है जिससे इसका अपना स्वरूप और अधिक विकसित हुआ है। इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि अनुवाद के कारण भाषा का सौन्दर्य बना रहे।



"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।"

–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन



पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी



आजादी के अमृत महोत्सव के तहत राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष 2021 से अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन भारतवर्ष में प्रारंभ किया गया। प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन वाराणसी में आयोजित किया गया एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन वर्ष 2022 में सूरत (गुजरात) में पंडित दीनदयाल उपाध्याय इण्डोर स्टेडियम में किया गया। मुझे यह लेख प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व की अनुभूति हो रही है कि मेरे कार्यालय द्वारा मुझे दोनों ही वर्षों के राजभाषा सम्मेलनों में भाग लेने हेतु नामित किया गया एवं मुझे इतने विशाल एवं वृहत कार्यक्रम का हिस्सा बनने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

इस लेख के माध्यम से मैं अपने पाठकों से द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में हुए अपने कुछ अनुभवों से अवगत कराना चाहती हूँ।

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का सम्मिलित आयोजन 14–15 सितंबर, 2022 को सूरत में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी की अध्यक्षता में भव्य एवं गरियामयी स्वरूप में सूरत, गुजरात में किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के साथ गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री निशिथ प्रमाणिक, रेल राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश, शिक्षा राज्य मंत्री श्री राजकुमार रंजन सिंह और राजभाषा विभाग की सचिव सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे। सम्मेलन में विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई जैसे–

- ❖ विगत 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा
- ❖ युवाओं को गर्व की अनुभूति करवाती हिंदी
- ❖ महात्मा गाँधी का भाषा चिंतन और राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान
- ❖ भाषाई समन्वय का आधार है हिंदी
- ❖ भारतीय सिनेमा और हिंदी



केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा कि हमारी राजभाषा और स्थानीय भाषाएं विश्व की सबसे समृद्ध भाषाओं में शामिल हैं और जब तक हम इस बात की कल्पना नहीं करते कि हमारा शासन, प्रशासन, ज्ञान, विज्ञान एवं अनुसंधान हमारी भाषाओं और राजभाषा में हो, तब तक हम भारतवर्ष की क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करने में सफल नहीं हो पायेंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (National Education Policy-2020) के माध्यम से देश में स्वभाषा में शिक्षा का बीज बोया है और देश जब आजादी की शताब्दी मनाएगा तब यह बीज वटवृक्ष बनकर देश की सभी भाषाओं को पल्लवित कर भारत को भाषा के क्षेत्र में रोजगार देने में सफल होगा। श्री शाह ने कहा कि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी के स्वराज की कल्पना में सिर्फ शासन में परिवर्तन नहीं था बल्कि उन्होंने स्वभाषा के लिए भी मुखर रूप से आवाज़ उठाई थी। भाषा क्षमता की परिचालक नहीं अपितु अभिव्यक्ति है। हमारे द्वारा मौलिक चिंतन की अभिव्यक्ति करना अनिवार्य है एवं यह अभिव्यक्ति स्वभाषा से बेहतर हो ही नहीं सकती।

आगे अमित शाह जी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हर वैश्विक मंच पर गौरव एवं सम्मान के साथ हिंदी में पूरे विश्व को संबोधित किया है। कोई भी भाषा दूसरी भाषा के शब्द लेने से लघु नहीं होती बल्कि वह गुरू और वृहत होती है, हमें भी हिंदी को लचीला एवं स्वीकृत बनाना पड़ेगा और अनेक भाषाओं से जो शब्द इसमें लिए गये हैं उन्हें हिंदी मे भी स्वीकारना होगा। उन्होंने यह भी बताया कि इसरो ने अपनी पूरी यशगाथा की काव्यगाथा राजभाषा में प्रकाशित कर एक बहुत बड़ा काम किया है।

सम्मेलन के दौरान विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें कई विद्वजनों को सम्बोधन हेतु आमंत्रित किया गया था। इसका विवरण संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत हैः–

प्रथम सत्र के प्रथम वक्ता थे– श्री सत्य नारायण जटिया (पूर्व अध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति), द्वितीय वक्ता– श्री भर्तृहरि मेहताब (संसदीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वर्तमान उपाध्यक्ष) एवं तृतीय वक्ता थे– श्री हरिवंश नारायण सिंह (उपसभापति राज्यसभा)।

इस सत्र में उल्लेख किया गया कि अहिन्दी भाषी राज्यों ने तो अंग्रेज़ी को अपना लिया परन्तु 1950 से 1975 लगभग 25 वर्षों तक हिंदी भाषा के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए गये। 1973 में अधिनियम बनाने का प्रयास किया गया परन्तु यह अधिनियम वर्ष 1976 में बन पाया। नराकास की कार्यप्रणाली को सटीक और समयशः करना आवश्यक है जिससे कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने की कार्य–प्रणाली में सुधार किया जा सके। हमारे देश में स्वतंत्रता के समय लगभग 13.5 करोड़ लोग हिंदी भाषी थे जो कि वर्ष 2011 में बढ़कर 43.65 प्रतिशत हो गये परन्तु आज भी हिंदी को सरकारी प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ ही जाती है।

द्वितीय सत्र के प्रथम वक्ता थे– श्री प्रसून जोशी, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड, मुंबई के अध्यक्ष, द्वितीय वक्ता के रूप में भारतीय प्रशासनिक सेवा से श्री गंगा सिंह, तृतीय वक्ता के रूप में श्री निशांत जैन, भारतीय प्रशासनिक सेवा एवं अंतिम वक्ता के रूप में हिंदी फिल्म अभिनेता श्री पंकज त्रिपाठी ने सभी को सम्बोधित किया।

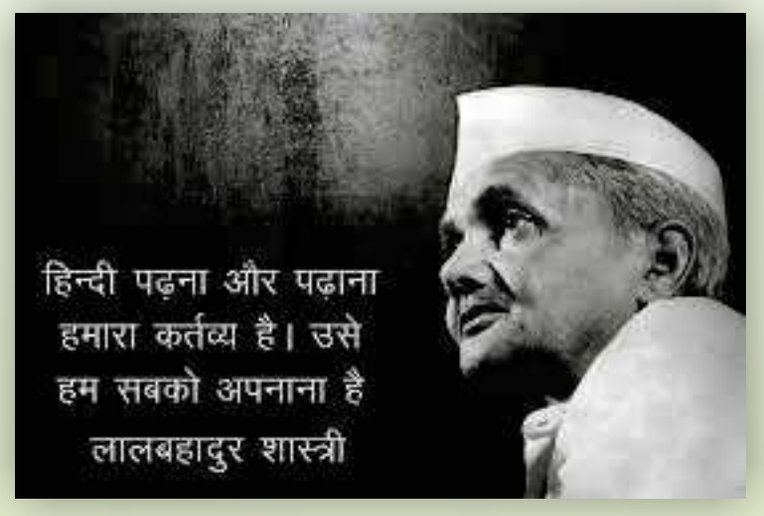


सभी वक्ताओं ने हिंदी भाषा के महत्व एवं उनके व्यक्तिगत जीवन में हिंदी भाषा से जुड़े अनेक अनुभवों को श्रोताओं के साथ साझा किया।

तृतीय सत्र का आरंभ लोकसभा सांसद, प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी के संबोधन के साथ हुआ। इनके पश्चात् राज्य सभा सांसद श्रीमती संगीता यादव ने अपना वक्तव्य दिया। सत्र के अंत में लोकसभा सांसद श्रीमती पूनम बेन हेमंत भाई ने भी बताया कि उनकी राजनैतिक सफलता का श्रेय केवल और केवल हिंदी भाषा को ही जाता है।

चतुर्थ सत्र का प्रारंभ श्री संजय द्विवेदी (भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक) के संबोधन से हुआ। उनके बाद श्री ए0के0 तोमर (सूरत के आयुक्त) को अपने विचार रखने के लिए मंच पर आमंत्रित किया गया। तृतीय वक्ता के रूप में श्री महेश मांजरेकर (फिल्म निर्माता एवं निदेशक) को अपने विचार साझा करने के लिए मंच प्रदान किया गया।

इसके साथ ही द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का समापन हुआ। हिंदी भाषा के विकास एवं प्रगति की दिशा में यह सम्मेलन मील का पत्थर साबित होगा। इससे हिंदी विद्वानों, ज्ञाताओं एवं हिंदी प्रेमियों के प्रोत्साहन में अतुलनीय वृद्धि होगी। आशा है कि आगामी वर्षों में भी गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा ऐसे सम्मेलनों का आयोजन किया जाता रहेगा और हमें हिंदी भाषा के इस महा उत्सव का हिस्सा बनने एवं ज्ञान प्राप्त करने का भी नया अनुभव प्राप्त होता रहेगा।



Co-रोना डायरीज भाग–3



शिवम् लिल्होरी 'बानगी'
लेखाकार

अगर आप ये किस्सा पढ़ रहे हैं, तो इतना तो तय है, कि आप भी हमारी तरह निहायत ही ढीठ और अड़ियल किस्म के इंसान है।

क्यूं ... ??!! वो इसलिए भाई साहब, अब तो तीसरी लहर भी गुज़र गई!!

अब तो हमारे और आपके सामने, बेचारी कोरोना जैसी रूहानी ताकत भी नतमस्तक हो गई। पहले कोरोना के दादाजी आये, फिर कोरोना के पिताजी डेल्टा वैरिएंट लहर लाये और अब!!!

नई पीढ़ी की तो पूछो ही नहीं भाई साहब। चूज़ा अंडे से निकला नहीं कि निकल लिया, छपरी ओम्रिकॉन बनके तीसरी लहर का परचम फहराने। वो भी देखिये तो सही किसके सामने, आपके और हमारे। लो कल लो बात!!



सदियों से बिना टीका लगाए जो पोलियो से लेकर चिकनगुनिया, बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू और न जाने कितनी खतरनाक बीमारियों के हमले विफल करते आये हैं, उन भारत मां के वीर सपूतों के सामने!!

लेकिन इस बौड़म, चीनी उत्पाती को पता नहीं कि गर सन् 1964 को अपवाद मान लें, तो उसके बाद इसके जैसे कितनों को धता बता के, आप और हम पैर जमा के डटे हैं। खैर छोड़िये, क्या चीनी और क्या ही इनका माल? चीनी लोगों ने कभी भारत से कुछ सीखा है जो ये अब सीखते। तभी तो हर बार अपनी छोटी–छोटी आंखो से मुँह की खाते हुए देखते हैं। वैसे भाई साहब, अन्दर की बात तो आप और हम ही जानते हैं। सौ बात की एक बात, कि जो बन्दे अपनी मिसेज़ के साथ क्वारंटाइन काल की सज़ा काटे हों और उसके बावजूद भी, जेल से छूटे किसी अल्हड़ कैदी के माफ़िक, एक महीने बाद सीना ठोक के कमरे से बाहर आएं हों, उनका ये औने पौने, कल के पैदा हुए कोरोना के लौंडे, क्या बिगाड़ लेंगे भला? इनको तो हमने ही अपने अन्दर लेके कुछ कानपुरी दबंगई के गुण डालने का प्रयत्न किया था, मगर सिखा कुछ नहीं पाये। कम से कम गुटका ही चबाते–चबाते गर जुबां केसरी बोलने लगता तो कोई उम्मीद की किरण नज़र आती। मगर नहीं, क्या मजाल जो कान पर जूँ रेंगी हो। फिर बकौल गालिब हमने भी कह दिया "कोई उम्मीद बर नहीं आती, कोई चीनी सूरत नहीं भाती..."

चलिए बहुत हो गई आपकी हमारी बकलोली। अब ज़रा "बाहेर" की ताज़ी हवा लें। बाहेर...!! बेड़ा गर्क हो इन खबरी चैनलों का। पूरे लॉक डाउन काल में पाकिस्तानी खबरें चला–चला के हमारे "बाहर" को इन्होने "बाहेर" जो बना दिया। छोड़िये... अब उठिये भी। चलिए जरा... चलें, "बाहेर" गलियों में, चहल कदमी करें। वो भी मास्क के बग़ैर। जी सही सुना..... मास्क के बग़ैर।

वाह!! क्या माहौल बना है कोरोना के बाद। लोग वापस पुरानी रिवायतें निभाने लगे हैं। फिरसे, तरसते कानों में पड़ोसियों के ताने आने लगे हैं। क्वारंटाइन की तनहा तल्खियों को छोड़, बाराती ढोल–नगाड़े फिर से बजाने लगे हैं। खूबसूरत पोशाकों में लोग फिर से भरमाने लगे हैं। बाजारों में भीड़–भाड़ के रंग दुकानदार फिर से जमाने लगे हैं।

"देखो तो सही, पहनो तो सही" से लेकर" ना तेरा ना मेरा ठीक–ठीक लगाओ ना भाया" के जप चलने लगे हैं। "उफ्फ बहुत तीखा है, भैया ज़रा पापड़ी देना"– फुचकों के फूटने से लेकर टिक्की की चटकारों तक के मज़े भी आने लगे हैं।

कितनी ही छुट्टियाँ निकल गईं पिछले दो सालों में सैलानियों के रंग देखे बिना। गंगा–घाट हो या यमुना–तीरे सभी जगह पहुँचे सैलानी धीरे–धीरे। पहाड़ों में धुएं के छल्ले, घाटियों में नशे में धुत हो करें बल्ले–बल्ले। पुलिस वाले बेचारे अदना सा डंडा लेकर किस–किस को ठेलें। सब जगह ही इंस्टाग्राम रील्स वाले थिरकने लगे हैं। वैसे ये इंस्टाग्राम भी खूब चला है आज कल। लोग केदारनाथ इसलिए नहीं जा रहे कि भोले के दर्शन हो, बल्कि इसलिए जा रहे हैं कि भोले बाबा के दर्शन करते हुए एक आध वीडियो तो हो।

इन सब मौज मस्ती के बीच एक शख्स लगा हुआ है, अपनी ही धूनी रमाने में। सुना है रूस के पुतिन चच्चा ने यूक्रेन के जेलेन्स्की बच्चा की, प्यार से पप्पी लेली। मगर बच्चा तो अड़ियल निकला और लगा रोने चिल्लाने। इतनी ज़्यादती हमसे देखी नहीं गई और हमनें चैनल बदला ही था कि तभी पूजा की थाली लिए और आरती के धुएं को फैलाते हुए, हमारी धर्म पत्नी ने एंट्री मारी। हमारे और अपनी सौत के बीच में आ खड़ी हुई । ऊँगली में टीका लेके बोली खड़े हो और आरती लो। हमने नज़र अंदाज करते हुए झाँक के टी.वी. देखना चाहा तो उन्होंने कमर से हमारी नजरों को रोकते हुए कहा – "आरती लोगे या उतरवाओगे।" कोरोना का वार और सर पे बीवी सवार। मामला गरम होते देख हमने खड़े होके शीश झुकाया। टीके की आरजू में बीवी से टीका लगवाते हुए हमने बड़ी मासूमियत से फरमाया कि "आज कल टीका कहीं और ही लग रहा है।" बस, इतनी सी बात और बीवी हमारी चलाने लगी बातूनी 'मुक्का–लात'। वो बिदक के चली गई और हम सोचते रहे कि ऐसा क्या गलत कह दिया। अभी भी हमारी बाजू दुख रही थी कोरोना के टीके की वजह से। खैर, दोबारा टी0वी0 पर नज़र गई तो तालिबानी लड़ाकों को झूमते पाया।

"आओ साजन, हमरी अटरिया सारा झगड़ा खतम हुई जाये"

टिंग–टोंग की आवाज से जो मोबाइल बजा तो हमने दोस्त का भेजा ये मैसेज पढ़ा। मैसेज पढ़ते–पढ़ते एक नज़र बीबी को तका और सोचा– "सजनवा तो अटरिया चला जावे मगर तब क्या होई, जब झगड़ा साथ ही घर ले आवे।"

बीवी तो घर में है, सो झगड़ा भी घर में ही है। इनको देखते–देखते कुछ ऐसे ही विचार मन में फूट रहे थे कि उनकी नज़र हम पर पड़ी और वो खौरिया के बोली –"क्या देख रहे हो ?"

इतना बोलना था कि उनकी ही चीख निकल पड़ी। हमपे नज़र रखते–रखते भिंडी पर नजर रखना भूल गईं। करमजली भिन्डी भी कोने से खिसक ली और चाकू के दांतों के बीच उनकी उँगली आ फँसी। उँगली कटी सो कटी मगर उस नासपीटे चक्कू के चक्कर में हमें डाँट पड़ी।

अव्वल तो गलती चाकू की...

फिर गलती भिन्डी की...

उसके बाद गलती ख़ुद इनकी...

मगर पिटारा फूटा हमारे सर पर। मानो देखते–देखते ही हमने आंखों से उनकी उँगली चबा डाली हो। खून निकल रहा था, हमने कहा –"ज़रा देखो तो।" उन्होने हाथ झटकते हुए, एक सांस में कहा– "कोई जरूरत नहीं तुम्हारी, उँगली कटवा दी हमारी, अब बेटा ले लो शाम की चाय तुम्हारी।"

कहते हुए और पैर पटकते हुए कमरे के अन्दर चली गयी और हमें यह सोचता हुआ छोड़ गयी कि –"आखिर क्या ख़ता थी हमारी ?"

नाशपीटे चाकू को देखते हुए और अपना सर खुजाते हुए दराज़ तक गए। दराज़ से दवाई की शीशी निकाल के उनके कमरे तक आये। कमरे का दरवाज़ा न तो खुलना था और न ही खुला। शीशी दवा की जेब में रख के, अब किस्मत को कोसते हुए हम जा रहे हैं कॉलोनी के बाहर वट

वृक्ष के नीचे स्थित अपने चाय के अड्डे पर।

आप भी चलिए, बाकी बातें वहीं होगीं चाय की चुस्कियों और धूम्र उगलते पान के साथ।....

जल्दी आइएगा कही चाय ठंडी न हो जाये...



"हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है।"

–राहुल सांकृत्यायन

खुश रहो और खुशियाँ बाँटो



मोहित कुमार
खंडीय लेखाधिकारी

आज हम आधुनिकता एवं ऐशो–आराम के बीच अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं और निरंतर भविष्य में भी इन मूल्यों की वृद्धि के बीच ही खुद को अपना जीवन–यापन करने का अनुमान लगा रहे हैं, इस बात में कोई संदेह भी नहीं है। परन्तु सवाल यह उठता है कि इन सबके बावजूद भी क्या हम खुश हैं? क्या हम अपने और अपनों के अलावा दूसरों के बारे मे सोच पा रहे हैं? क्या हमारे कार्य का प्रभाव समाज के उस तबके को मिल रहा है जिसको इसकी जरूरत है? अगर नहीं तो हमें ख़ुद के भीतर झाँकने की जरूरत है और सोचने की जरूरत है कि आखिर हम मनुष्य योनि में जन्म लेने के बाद भी भी किस दिशा की ओर बढ़ रहे हैं। हमें उन सब दानव रूपी तत्वों को अपने भीतर पहचानना है, जो हमें हमारे खुशियों से दूर ले जा रहे हैं और खुद में रामरूप जगाकर इन सब कुरीतियों का संहार कर खुशियों का साम्राज्य स्थापित करना है। हमें एक ऐसा समाज बनाना है जहाँ बच्चे केवल ऑनलाईन गेम और काल्पनिक दुनिया तक ही सीमित न रहें बल्कि पार्क और खुले आँगनों में निकलकर हँसें और हँसाएँ, हमें बुजुर्गों को वृद्धाश्रमों के हवाले ना कर, अपने बीच रखकर, उनकी सेवा कर, उनके झुर्रियों भरे चेहरे से निकलती हुई मुग्ध हँसी का आनंद लेना व एक दूसरे के अनुभवों को साझा करना है। हमें ऐसा परिवेश बनाना है जहाँ स्वच्छ वायु हो, निर्मल जल हो, हरियाली हो एवं सारे पशु–पक्षी स्वस्थ अवस्था में होकर बिना किसी डर के अपने अनुकूल भ्रमण करें।



जिस परिवेश में इन सब मूल्यों का समावेश हो क्या वहाँ एक सामान्य व्यक्ति के खुश रहने में संदेह किया जा सकता है? नहीं, कभी नहीं लेकिन ये तब ही संभव है जब हम ख़ुद खुश हों तब ही हम दूसरों तक अपनी खुशियाँ पहुँचा सकते हैं। लेकिन सवाल उठता है कि हम खुश कैसे रहें? खुश रहने का केवल एकमात्र तरीका या कोई घुट्टी नहीं है बल्कि कई तत्व हैं जिन्हें हमें अपने भीतर उतारने की जरूरत है और उनको उतारकर उसके अनुरूप खुद को ढालना है। खुश रहने के लिए सबसे पहले हमे अपनी सोच को सार्थक बनाना है, फिर दृढ़ निश्चय कर बिना किसी आलस के खुद को शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक गतिविधियों में संलग्न रखते हुए, खुद को पूर्ण समर्पित करते हुए अपने तय किये हुए कार्य को संपूर्ण करना है, अगर हम अपना निर्धारित किया गया काम नियमित रूप से करते रहेंगे तो अवश्य ही हम खुश रहेंगे और हम खुश रहेंगे तभी हम दूसरों को खुशियाँ बाँट सकते हैं और उनकी समस्याओं एवं दुखों को सुनकर उनका सकारात्मक समाधान दे सकते हैं। लेकिन इसके लिए अनिवार्य है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर उठे, अपनी जिम्मेदारियों को समझे और पूरी श्रद्धा से उसको निभाए।

गूँज रही शहनाइयाँ



पूजा त्रिपाठी
पत्नी श्री नवीन त्रिपाठी
(सहायक लेखाधिकारी)

टकटकी लगाए बैठे मानो थम गई हों जैसे साँसें

खत्म हुआ इंतजार खिल उठे जाँबाज वैज्ञानिकों

के चेहरे बज उठी तालियां हो रहे गौरवान्वित

देशवासी गूंज उठी शहनाइयाँ।

फहरा दिया जब चन्द्रयान–3 ने

चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगा

रच दिया इतिहास उसी क्षण

जो चाँद छुपाए बैठा था

सुलझेंगी अब वो पहेलियां।



उन वैज्ञानिकों को सलाम

सलाम है उनके धैर्य, मेहनत

एकाग्रता, बुद्धिमत्ता को जिन्होंने

तिरंगे की आन बान शान को बढ़ाया।

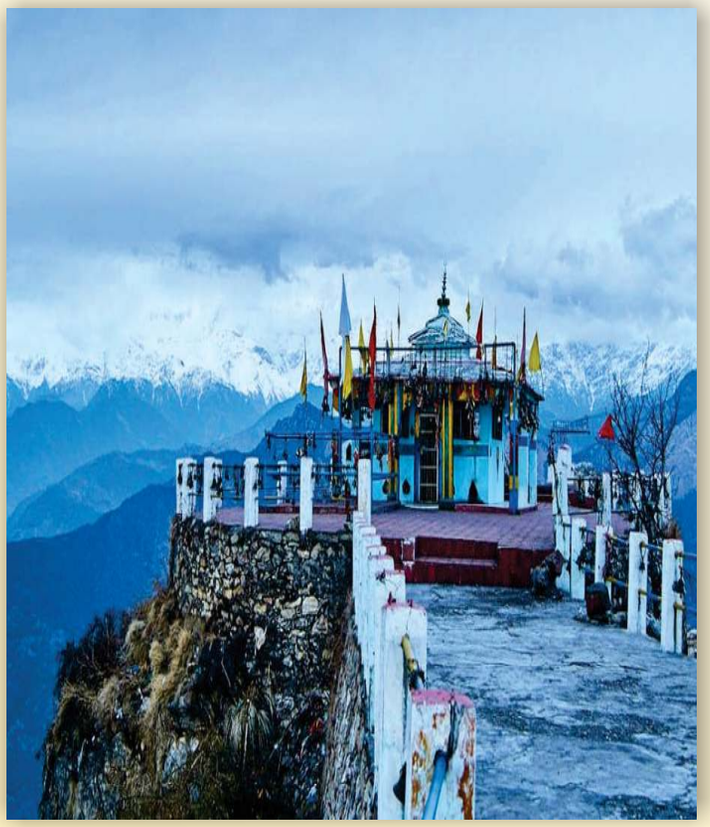
जय हिन्द।

क्रोंच पर्वत पर विराजमान हैं, कार्तिक स्वामी



बृज भूषण सेमवाल
वरिष्ठ लेखाकार

मैंने वर्ष 2022 के माह अक्टूबर में कार्तिक स्वामी मंन्दिर के दर्शन किये। मेरी यात्रा देहरादून से प्रारम्भ हुई, मैं सुबह 7:15 बजे की विश्वनाथ बस से बांसवाड़ा पहुँचा। वहाँ रात्रि में एक मित्र के यहाँ रात्रि निवास किया, अगली सुबह टैक्सी से कनकचौरी (पोखरी) पहुँचा, वहाँ से 3 कि0मी0 की दूरी तय करने के बाद क्रोंच पर्वत पर विराजमान कार्तिक भगवान की तपस्थली पहुँचा। कार्तिक स्वामी मंदिर के गर्भगृह में पहुँचने के मुख्य सड़क मार्ग से 80 सीढ़ियाँ चढ़कर कार्तिक जी के दर्शन प्राप्त हुए। यहाँ देखकर मन प्रसन्न हो गया, शान्ति की अनुभूति होने लगी। मन्दिर समुद्र तल से 3050 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। कार्तिकेय भगवान शिव के बड़े पुत्र हैं। कहते हैं कि भगवान शिव जी ने अपने पुत्रों से कहा कि जो पहले ब्रह्मांड के सात चक्कर लगाएगा उसे पहले पूजा करने का सम्मान मिलेगा यह सुनकर भगवान कार्तिक अपने वाहन पर ब्रह्मांड का चक्कर लगाने के लिए निकल पड़े। वहीं अपनी बुद्धि और विवेक से भगवान गणेश जी ने अपने माता–पिता के सात चक्कर लगाकर परिक्रमा की, जिससे शिव जी ने प्रसन्न होकर गणेश जी को पहले पूजनीय होने का सम्मान दिया। जब कार्तिकेय ब्रह्मांड के सात चक्कर लगाकर आये तो नारद जी ने कार्तिकेय जी को पूरा वृतान्त सुना दिया इस बात पर क्रोधित होकर कार्तिकेय जी ने अपनी माँ पार्वती जी और पिता के प्रति समर्पण के प्रमाण के रूप में अपनी हड्डियों को पेश कर अपना बलिदान कर दिया और क्रोंच पर्वत पर ध्यान करने के लिए चले गये जिसे कार्तिक स्वामी के नाम से जाना जाता है।



पूरे उत्तराखण्ड राज्य में कार्तिक स्वामी का यही एक मात्र मन्दिर है। इसके अलावा अन्य जगहों पर कोई मन्दिर नहीं है।

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय।

दूरीः– कार्तिक स्वामी जी के मंदिर तक जाने के लिये ऋषिकेश से रूद्रप्रयाग तक 138 कि0मी0 की दूरी है और रूद्रप्रयाग से कनक चौरी की दूरी 38 कि0मी0 है तथा कनक चौरी से कार्तिक स्वामी 3 कि0मी0 दूरी के पैदल मार्ग से पहुँच सकते हैं। यहाँ रहने तथा खाने की उचित व्यवस्था है तथा मोटर–यान एवं अपने निजी वाहन से यहाँ पहुँच सकते हैं।

मेरी यात्रा लगभग एक दिन में पूरी हुई और शाम को मैं अपने मित्र के यहाँ रात्रि विश्राम के लिये वापस आ गया था। आप भी कार्तिक स्वामी जी के दर्शन करने के लिये अवश्य जायें। मेरी यात्रा सुखद और प्रसन्नचित्त रही।



"हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।"

–डॉ० संपूर्णानंद

कविता – पहचान कवि की



शिवम् लिल्होरी 'बानगी'
लेखाकार

आपका तहे दिल से स्वागत है हमारी नई शृंखला कविता–पहचान कवि की में।

इस शृंखला में हम आपके सामने लेकर आयेंगे कुछ ऐसी रचनायें, जो आपके मन पटल पर रची बसी हैं। मगर आप नावाक़िफ हैं, उन रचनाओं के रचयिताओं से। या ऐसा हो सकता है कि सोशल मीडिया की फैलाई भ्रांतियों के कारण, आप किसी और कवि को इन रचनाओं का सृजनकर्ता मानते हों। तो साहित्य की इस घाटी में फैले कुहासे को हटाने के लिए हमारा ये प्रयास कितना सार्थक हुआ, यह पूरा लेख पढ़ने के बाद हमें ज़रूर बतायें। चलिए लफ्ज़ों के इस कारवां को आगे बढ़ाते हैं। इस कड़ी में हमारी पहली कविता है–

"कोशिश करने वालों की हार नहीं होती"



सरेआम राह चलते अगर किसी स्कूल जाते बच्चे से भी पूछें कि – "बेटा बताओ, 'कोशिश करने वालें की हार नहीं होती', ये किस कवि की रचना है–तो निःसंकोच वो बोलेगा बाबूजी कि यानी सदी के महानायक अमिताभ बच्चन के पिता एवं हिन्दी साहित्य में हस्ताक्षरित रूप से अंकित श्री हरिवंश राय बच्चन जी की। इस बात का आधार ये है कि एक पीढ़ी द्वारा इस कविता को भुलाये जाने के बाद, अगली पीढ़ी ने ये कविता सुनी, "The Big B" यानी अमिताभ बच्चन साहब की ज़ुबानी और वो भी "कौन बनेगा करोड़पति" के एक एपिसोड में। अब बिग बी की ज़ुबानी, वो भी इतनी दमदार कविता–लोगों को ये मानने में ज़रा भी देर न लगी कि, हो न हो, ये कविता तो ज़रूर श्री हरिवंशराय बच्चन जी की कलम से उपजी होगी। तभी तो उनके सुपुत्र इसका वाचन कर रहे हैं।

और लिजिये, आग को भड़काया सोशल मीडिया ने। किसी ने स्टेटस लगाया होगा की–" लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालो की हार नहीं होती" और लिख दिया नीचे नाम–डॉ हरिवंश राय बच्चन औने पौने "Rap songs" में उलझी जनता को इतनी फुर्सत कहाँ, कि इस बात को जाँच ले और वैसे भी जनता को दमदार कविता सुनने की ना तो आदत रही और ना ही रही, कुव्वत। सो लगे सब, भेड़ चाल चलने और हाथों–हाथ ली गई इस कविता का जनक मान लिया गया, "श्री हरिवंश राय बच्चन" को, वैसे इसमें बुराई भी नहीं है। पूज्य बाबूजी की लेखनी थी ही इतनी दमदार कि किसी को शुब्हा हो भी तो कैसे? और वैसे भी हिन्दी की किताब को एक रात पहले कहानी की माफ़िक पढ़कर, सिर्फ पास होने लायक 'मार्क्स' लाने वाली पीढ़ी को कहाँ याद रहते वो नाम, जिनकी वजह से हिंदी साहित्य का परचम आज तक बुलंद रहा है। सो भाई, नमक लगी न मिर्ची और रंग निखरा चोखा। हो गए डॉ हरिवंश राय बच्चन, बिना कोई कोशिश करे, इस कविता के उत्पादक। एक ऐसी उपलब्धि जो खुद

उन्हें नागवार गुजरती होगी। अगर हरिवंश जी, आज हमारे बीच में होते तो बतला देते सच क्या है?

पर भाई साहब फर्ज़ कीजिये, ऊपर से ये सब तमाशा देख कर अपने मित्र सोहन जी को क्या कहते होंगे, "राय साहब"। हमें लगता है कि अपना सर पकड़ के बैठ जाते होंगे और उल्टा सोहन जी ही मंद–मंद मुस्करा देते होंगे। कहते होंगे कि – "बच्चन साहब, नाम में क्या रखा है ? कम से कम एक पूरी पीढ़ी तो लहरों से नौका निकालने की कोशिश करने में सफल हो आपके बदौलत।"

एक मिनट, क्या कहा आपने – "कौन सोहन जी ?"

अरे माफ़ी हुजूर, इस किस्सागोई में हम आपको पहले इस बात से वाकिफ़ तो करवा दें कि इस कालजयी कविता के रचयिता हैं "श्री सोहन लाल द्विवेदी"।

जी सोहन लाल द्विवेदी जी, एक ऐसी शख्सियत जिसे राष्ट्रकवि की उपाधि से अलंकृत किया गया था। वो सोहन लाल जी, जिनकी कवितायें सदैव ऊर्जा और चेतना से भरपूर होती थीं। वो सोहन लाल जी जिन्हें सन् 1969 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। और करें भी क्यों ना अगर कोई ये लिख के दे कि–

"लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती"

वही सोहन लाल द्विवेदी जिनके बारे में खुद डॉ0 हरिवंश राय बच्चन ने एक बार लिखा था–

"जहां तक मेरी सहमति है जिस कवि को राष्ट्रकवि के नाम से सर्वप्रथम अभिहित किया गया वे सोहन लाल द्विवेदी थे गांधीजी पर केन्द्रित उनका गीत "युगावतार" या उनकी चर्चित कृति "भैरवी" की पंक्ति "वन्दना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो, हो जहां बलि शीश अगणित एक सिर मेरा मिला लो" स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का सबसे अधिक प्रेरणा प्रद गीत था।"

तो बताइये साहब क्या कहेंगे इस खुलासे के बाद। वहीं दूसरा पहलू देखें इस घटना का तो, अंग्रेजी की कहावत याद आ जाए "it was a blessing in disguise" यानी "अप्रत्यक्ष कृपादान"। इस घटना ने नई पीढ़ी को रूबरू कराया एक ऐसी कविता से जिसके लफ्जों की आज के समय में बहुत ज़रूरत है। जिस देश में बच्चे सिर्फ स्कूली परीक्षाओं के डर से खुदखुशी कर लें, वहां ज़िन्दगी के इम्तिहानों से पार पाने को अगर खुद अमिताभ बच्चन ये सुनायें–

"डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा–जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती"

तो कोई क्यूँ न सुने। बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित माता–पिता, क्यों नहीं चाहेंगे कि उनकी बगिया के मुरझाये फूल कुछ ऐसा सुनें, जिससे दिलासा मिलता हो। एक आस जगती हो। आज कल के नित बदलते परिवेश में नैतिक मूल्यों में आई भारी गिरावट को एक तिनके का सहारा ही मिले, मगर मिले तो सही। याद रखिये, पतन को रोकने के लिये जतन चाहिये और जतन करने के लिए, "हिम्मत"। मगर ये हिम्मत किसी बाबा के द्वारा झाड़–फूँक कर दिए रत्न से नहीं आती है। वो हिम्मत आती है, हिम्मत भरे लफ्ज़ों से। वो हिम्मत भरे लफ्ज़, जो कोई उस वक्त आपको बोल दे जिस वक्त आप थक–हार कर, सकुचा कर बैठ जाते हैं। माथे का पसीना पलकों से टपक रहा होता है, लब सूख रहे होते हैं, मन में ख्यालों के बवंडर उठ रहे होते हैं। ऐसे में कोई अगर सिर्फ इस कविता की चंद ये लाइनें ही फुसफुसा दे कान में कि–

"असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो
क्या कमी रह गयी देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय–जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।"

तो क्या मजाल कि आपके कदम फिर दौड़ न पड़ें,।

नमन है सोहन लाल द्विवेदी जी को, जिन्होंने एक पथ–प्रदर्शक रचना लिखी।



डॉ0 हरिवंश राय 'बच्चन'



सोहन लाल द्विवेदी

हिन्दी को जीवन में अनिवार्य स्थान देने की आवश्यकता



विनोद कुमार शर्मा
वरि0 लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

भारत एक बहुभाषायी देश है। हमारे देश में अनेक क्षेत्रीय भाषाएं हैं लेकिन देश की कुल आबादी के आधे से अधिक लोगों की मातृ भाषा हिन्दी है। राजभाषा हिंदी के विकास की जब हम बात करते हैं तो यह आवश्यक प्रतीत होता है कि हम यह दिल से सोचें कि क्या हमें अपनी भाषा से लगाव है। वास्तव में यदि देखा जाए तो किसी भी भाषा का विकास एवं प्रचार–प्रसार किया जाना तब तक पूरी तरह संभव नहीं है जब तक कि उस भाषा के प्रति हमारे मन में अपनत्व की भावना नहीं होगी। हिंदी का विकास एक सतत् प्रक्रिया है तथा इसके लिए निरन्तर कार्य करते रहने की आवश्यकता है। हम हिंदी में कार्य करने हेतु किसी माह विशेष में कुछ दिन निर्धारित करके हिंदी का विकास नहीं कर सकते, इसके लिए पूरे वर्ष नियमित रूप से हिंदी में कार्य करने की आवश्यकता है। नियमित रूप से कार्य किया जाना तभी संभव हो सकता है जबकि हम हिंदी को अपने जीवन में अनिवार्य स्थान प्रदान कर दें। हिंदी में सोचें, हिंदी में लिखें, हिंदी में बात करें तथा अपने घर–परिवार में भी हिंदी को अपनाएं। हिंदी में बोलने, लिखने में मन में कोई संकोच या हीन भावना, यदि हो, तो उसे निकाल फेकें। गर्व के साथ हिंदी भाषा को अपनाएं।

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपना सभी सरकारी कामकाज जैसे पत्रावलियों में टिप्पणी लेखन, जारी करने हेतु पत्रों का मसौदा तैयार करना, प्रशासन अनुभागों में किए जाने वाले समस्त कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित करें। सभी विभागाध्यक्ष/कार्यालयाध्यक्ष भी यदि अपने अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते हैं तो निश्चित रूप से उनका उत्साहवर्द्धन होता है। हिंदी में अच्छा कार्य करने वाले अधिकारियों/ कर्मचारियों को और अधिक प्रेरित करने के लिए उन्हें मानदेय एवं प्रशस्ति पत्र के माध्यम से पुरस्कृत किया जा सकता है।

कार्यालय में ही नहीं अपितु अपने घर एवं समाज में भी हमें हिंदी में बातचीत करने तथा अपने बच्चों को, जोकि देश की भावी पीढ़ी हैं, हिंदी का अच्छा ज्ञान प्रदान करने के लिए भी सभी संभव प्रयास करने के साथ ही साथ इस संबंध में निरतंर प्रयासरत रहने की आवश्यकता है। जहाँ तक समस्त सरकारी कामकाज हिंदी में करने का प्रश्न है, हमें अपना कामकाज करने के लिए साहित्यक या शुद्ध हिंदी के शब्दों को ढूँढ़ने में समय व्यर्थ करने के स्थान पर सरल एवं आम बोलचाल के ऐसे उपयुक्त शब्दों को, जिनको समझने में किसी को कठिनाई न हो, अधिक से अधिक अपनाने की आवश्यकता है ताकि हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक बढ़ सके। हिंदी के कठिन शब्दों को अपनाकर हम हिंदी का प्रचार–प्रसार नहीं कर सकते बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि अन्य भाषाओं, चाहे वह स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा के हों या फिर अंग्रेजी या ऊर्दू के, सभी ऐसे प्रचलित एवं जनसाधारण द्वारा सामान्य प्रयोग में लाये जाने वाले शब्दों को खुले दिल से अंगीकार किया जाना चाहिए।

हिंदी वह भाषा है जो पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने की क्षमता रखती है। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता को बनाए रखने के लिए भी हिंदी आवश्यक है। आज हम हिंदी के बिना देश के विकास या उत्थान की कल्पना भी नहीं कर सकते। हिंदी हमारे देश के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी मजबूत जड़ें जमा चुकी है। हमारे देश में बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ, चाहे वह विदेशी कम्पनियाँ ही क्यूँ न हो, बाज़ार में अपने पैर जमाने के लिए तथा ग्राहकों, विशेषकर हिंदी भाषी ग्राहकों, जो कि देश की कुल जनसंख्या का एक बहुत बड़ा वर्ग है, तक अपनी आसान पहुँच बढ़ाने के लिए न केवल हिंदी भाषा–भाषी युवक–युवतियों को अधिक से अधिक रोजगार प्रदान करने के लिए विवश हैं बल्कि इन कंपनियों द्वारा हिंदी में जारी किए जाने वाले विज्ञापनों पर भी अच्छा खासा व्यय किया जाता है। इसको देखते हुए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि आज हमारे देश में हिंदी के लिए संभावनाओं के नित नये द्वार खुल रहे हैं तथा हिंदी का दबदबा लगातार बढता जा रहा है परिणामस्वरूप समय के साथ हिंदी भाषा और सशक्त होती जा रही है। कई क्षेत्रीय पूर्वाग्रह के बावजूद भी इस बात को कोई नकार नहीं सकता कि आज भारत के एक बड़े

भू–भाग की संपर्क भाषा हिंदी है। देश की राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के पूरी तरह स्थापित न हो पाने का कारण एक वर्ग विशेष का अंग्रेजी के प्रति मोह तथा हमारे देश के एक या दो राज्यों द्वारा अनावश्यक रूप से भाषा को एक संवेदनशील मुद्दा बनाया जाना है, जबकि देखा जाए तो वास्तविकता इसके बिल्कुल उलट है। वास्तविकता यह है कि हिंदी भाषा का किसी भी क्षेत्रीय भाषा या स्थानीय भाषा से कोई बैर नहीं है, हिंदी तो सभी क्षेत्रीय भाषाओं को साथ लेकर चलने में विश्वास रखती है।

हिंदी के साथ यदि हमें अंग्रेजी या किसी क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान है तो यह अच्छी बात है। क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी की दूरी तब तक कम नहीं होगी जब तक कि हम हिंदी के साथ–साथ कम से कम किसी एक क्षेत्रीय भाषा को सीखने का प्रयास न करें। जब हम दक्षिण भारत या किसी अन्य अहिंदी भाषी क्षेत्र में जाते हैं तो क्षेत्रीय भाषा के ज्ञान के अभाव में संवाद करने में कठिनाई हो सकती है। स्थानीय लोगों के साथ अंग्रेजी भाषा में भी सभी स्थानों पर संवाद किया जाना संभव नहीं है। लेकिन यदि आपको उस क्षेत्र की भाषा का थोड़ा–बहुत ज्ञान है तो आपको संवाद करने में सरलता हो सकती है।

यदि हम हिंदी को अपने जीवन में अनिवार्य स्थान प्रदान करते हैं तथा हिंदी को दिल से अपनाते हैं तो हिंदी को इस देश में पूरी तरह स्थापित करने से कोई नहीं रोक सकता। संभवतः आधे–अधूरे मन से अपनाने के कारण ही इतने वर्षों के अंतराल के बाद भी आज तक हिंदी राजभाषा के स्थान से आगे बढ़कर इस देश की राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं कर सकी है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अपना सभी सरकारी कामकाज शत–प्रतिशत हिंदी में करना सुनिश्चित करें। किसी भी काम को हिंदी में करने में कोई कठिनाई नहीं है। हिंदी जनसाधारण की भाषा है तथा सरल होने के साथ ही साथ इसे सीखना भी आसान है।



कहीं बिसर न जाये किताबों की महक...



शिवम् सिंह
प्रभागीय लेखाधिकारी

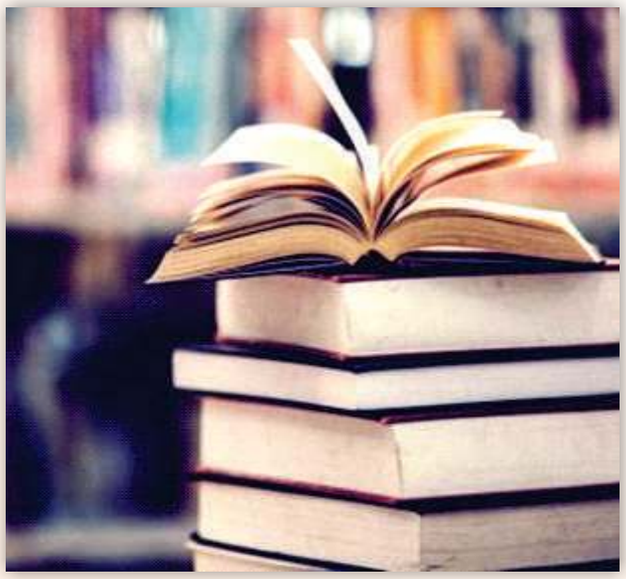
हम जिस तरह घरों में हर एक खाली जगह में टाइल्स और सीमेंट भरकर मिट्टी की सौंधी महक को भूल चुके हैं, ठीक उसी तरह आज हम बिसरा चुके हैं किताबों कि भीनी खुशबू को। आज किताबें शोभा बढ़ाती हैं क्षैतिज फैले पुस्तकालयों के ऊर्ध्वाधर स्तंभों की। ड्राइंग रूम की आलमारियों में सजती हैं या फिर शहर के बाहर किसी वेयरहाउस में ओढ़ती हैं शांति रूपी धूल की चादर। इनकी मौजूदगी इंटेलेक्चुअल दिखने का सबब भर रह गया है। ये फ़िल्टर के साथ पोस्ट होती हैं फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम की स्टोरीज़ में। इन्हें नसीब होता है पाठक के साथ एक अदद सेल्फ़ी और "करंट रीडिंग" का हैश टैग। डिजिटल लाइब्रेरी, ई–बुक इत्यादि में उपलब्धता ने इन्हें हर एक मायने में सर्वव्यापी बना तो दिया है पर फिर भी ये अपने मुख्य उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाती। ये बहुत कम पढ़ी जाती हैं।

हम आधे खुशनसीब डिजिटल माइग्रेंट्स हैं जो गाँव में पले–बढ़े हैं और शहरों में नौकरी करने आ गये। हमने लकड़ी की पटरी पर स्याही घोटार कर सफ़ेद खड़िया से लिखना सीखा था और आज आईपैड पर आई–पेंसिल घुमा रहे हैं। जबकि एक डिजिटल पीढ़ी है जिसने रंगीन पेस्ट चिपके प्लास्टिक का टूथब्रश मुँह में लेकर जन्म लिया। जिसने रोज़ सुबह आम, अमरूद या नीम के पेड़ की टहनी से दातून तोड़ने का सुख नहीं जाना। जिसने लालटेन नहीं देखा और जिनको लगता है कि फल मॉल में हुआ करते हैं। ये वो पीढ़ी हैं जो प्लास्टिक के पेड़ खरीदती है। उसे गुम हो रही उस दुनिया से साक्षात्कार किताबों के द्वारा ही कराया जा सकता है। वो दुनिया जिसमें अकेले होने के मायने नदी के किनारे बैठकर कंकड़ मारना था। जहां गाँव के बाहर के टीले पर बैठे हुए सूरज को डूबते देखना रोज़ाना का कार्यक्रम था। जहाँ बचपन पूरे दिन बागों में पेड़ों पर चढ़ता–उतरता–दौड़ता तितली पकड़ता था। जहां दिन भर की क़वायद चिड़ियों के घोंसले ढूँढ़ने की और शाम में मुट्ठी भर जुगनू जुटाने की हुआ करती थी। "तितलियों के पीछे वाली ये दुनिया आज किताबों में बची हुई है और अगर किताबें बिसराई गईं तो ये दुनिया भी उसी के साथ गुम हो चली जाएगी।

आज रील्स ओर शॉर्ट्स की आबाद दुनिया में किताबें उपेक्षित सी अलमारियों से तकती रहती हैं कि आख़िर उनका नंबर कब आएगा। नेटफ़्लिक्स और प्राइम के दौर में मूवीज व वेब–सीरीज की बाढ़ में मोबाइल पर आसानी से उपलब्ध विकल्पों ने किताबों से जुड़ना और कठिन कर दिया है। लेकिन वैज्ञानिक रूप से अन्वेषण करें तो जहाँ एक ओर किताबें मनुष्य के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ मानसिक विकास में सहायक होती हैं वहीं जब हम कोई दृश्य मीडिया देखते हैं तो हम किसी दूसरे की इमेजिनेशन को जी रहे होते हैं। इसमें न्यूनतम मानसिक क्रिया होती है। जबकि पुस्तकों को पढ़ने के संबंध में ऐसा नहीं होता। जब हम किताब पढ़ते हैं तो हमारा दिमाग़ उच्चतम स्तर पर कार्य करता है। उदाहरणतया अगर मैं कहूँ कि–

"एक अंधेरी रात में जंगल से गुजरता हुआ काले घोड़े वाला ताँगा"

इस पंक्ति ने आप सबके दिमाग़ में अलग–अलग रूप से आकार लिया होगा। प्रत्येक के दिमाग़ में अंधेरी रात, जंगल और ताँगे के अलग–अलग दृश्य उभरे होंगे। लेकिन जब हम "एक अंधेरी रात में जगंल से गुजरता हुआ घोड़े वाला ताँगा" का कोई दृश्य पर्दे पर देखते हैं तो हम उस दृश्य को शूट करने वाले के इमेजिनेशन को देख रहे होते हैं। जिसमें मानसिक क्रिया लगभग शून्य होती है।



सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हर यूज़र के लिये भरपूर कस्टमाइज्ड कंटेंट परोसा जा रहा है। सूचनाओं का निर्बाध प्रवाह हो रहा है। स्मार्टफ़ोन के गांडीव पर "दो जीबी फ्री डेटा पर डे" की प्रत्यंचा खींचे हुए आज का ई–अर्जुन, डोपामीन का संधान कर एक से दूसरे रील्स–शॉर्ट्स को लगातार व अथक बेधता चला जा रहा है। यह नवीन ई–कुरूक्षेत्र सूर्योदय का मोहताज नहीं है। यह तो सूर्यास्त के पार चौगुनी गति से जारी है। आज का ई–अभिमन्यु उँगलियाँ घिस–घिस कर पूरे दिन चक्रव्यूह तोड़ रहा है। सब उसमें एम्बेडेड है, वर्चुअल ट्रेनिंग में वो सोया नहीं था। न जाने माधव कब आयेंगे इन्हें सिखाने।

ये तो प्रत्यक्ष बातें हुईं पर परोक्ष रूप से एक अलग ही कहानी है। आज व्यक्ति विशेष के स्तर पर यह समझ पाना अत्यंत कठिन हो चुका है कि आप जो देख रहे हैं उसे आपको देखना है या वह आपको दिखाया जा रहा है। यह काफ़ी जटिल तथ्य है कि व्यक्ति के पास "मुक्त रूप से विकल्प चयन" (फ्री विल) उपलब्ध है या नहीं। अर्थात् जो हम उपभोग या उपयोग कर रहे हैं, वो हमारी इच्छानुरूप है या हमारी इच्छाएँ उस तरह बना दी गई हैं।

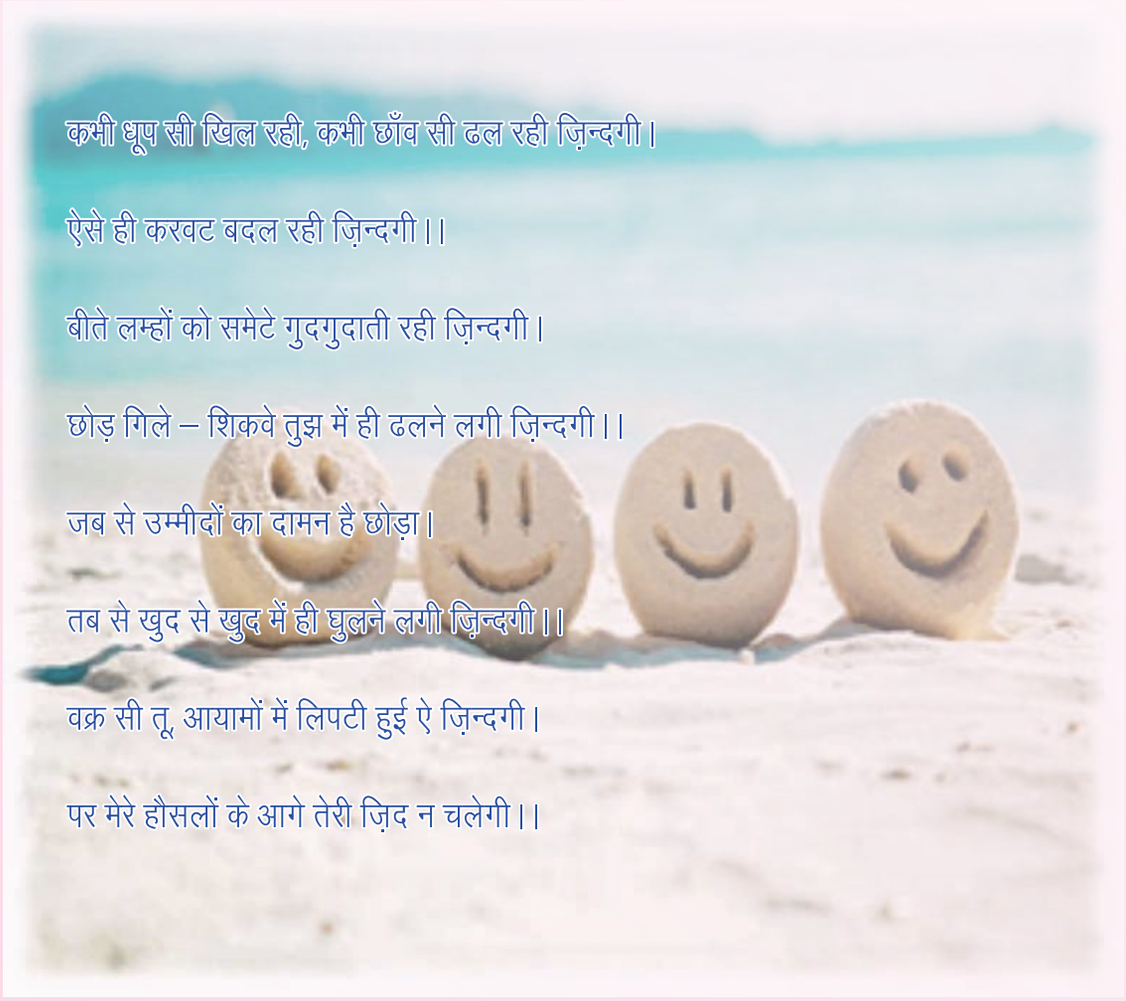
मार्केटेड सूचनाएँ या यूँ कहें कि स्पॉन्सर्ड सूचनाएँ हमारे नेचुरल एसेंस को समाप्त कर रही हैं। ऐसे में व्यक्तित्व का मुक्त विकास संभव नहीं हो पा रहा। यह दुखद स्थिति है। आधुनिक ई–भौतिकतावाद में व्यक्ति सब्जेक्ट से अधिक ऑब्जेक्ट बनता चला जा रहा है। इस ट्रैप से निकलने में किताबों से अच्छा विकल्प उपलब्ध नहीं है। आज किताबों में ही इतना सामर्थ्य बचा है कि वे व्यक्ति को इस स्तर तक पहुँचा सकती हैं कि वह इस मकड़–जाल को समझ कर स्वयमेव उचित निर्णय ले सके। इस पर मुझे अपनी किताब "बादल, पर्वत, और जुगनू" की पंक्ति याद आ रही है–

"कभी यूँ ही निकल जाना चाहिए कुछ इस यक़ीं के साथ कि यात्रायें ही असली मंज़िल हुआ करती हैं या उठा लीजिए कोई किताब कुछ इस तरह कि इस दुनिया में केवल आप और वो ही बचे हों।"

ऐ ज़िन्दगी



पूजा त्रिपाठी
पत्नी श्री नवीन त्रिपाठी
(सहायक लेखाधिकारी)



कभी धूप सी खिल रही, कभी छाँव सी ढल रही ज़िन्दगी।

ऐसे ही करवट बदल रही ज़िन्दगी।।

बीते लम्हों को समेटे गुदगुदाती रही ज़िन्दगी।

छोड़ गिले – शिकवे तुझ में ही ढलने लगी ज़िन्दगी।।

जब से उम्मीदों का दामन है छोड़ा।

तब से खुद से खुद में ही घुलने लगी ज़िन्दगी।।

वक्र सी तू, आयामों में लिपटी हुई ऐ ज़िन्दगी।

पर मेरे हौसलों के आगे तेरी ज़िद न चलेगी।।

"हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।"

–पुरूषोत्तम दास टंडन

गर्व की भाषा हिंदी



विनोद कुमार शर्मा
वरि0 लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

हिंदी बोलने में हम

ना करें शर्म महसूस

हिंदी गर्व की भाषा

करें दिल से महसूस

आखिर अंग्रेजों की दासताँ

हम कब तक स्वीकार करेंगे

अंग्रेज़ी का मोह

हम कब त्याग करेंगे

हिंदी सरल है, सुबोध है

और लिखने में है आसान

करोड़ो भारतीय समझें जिसको

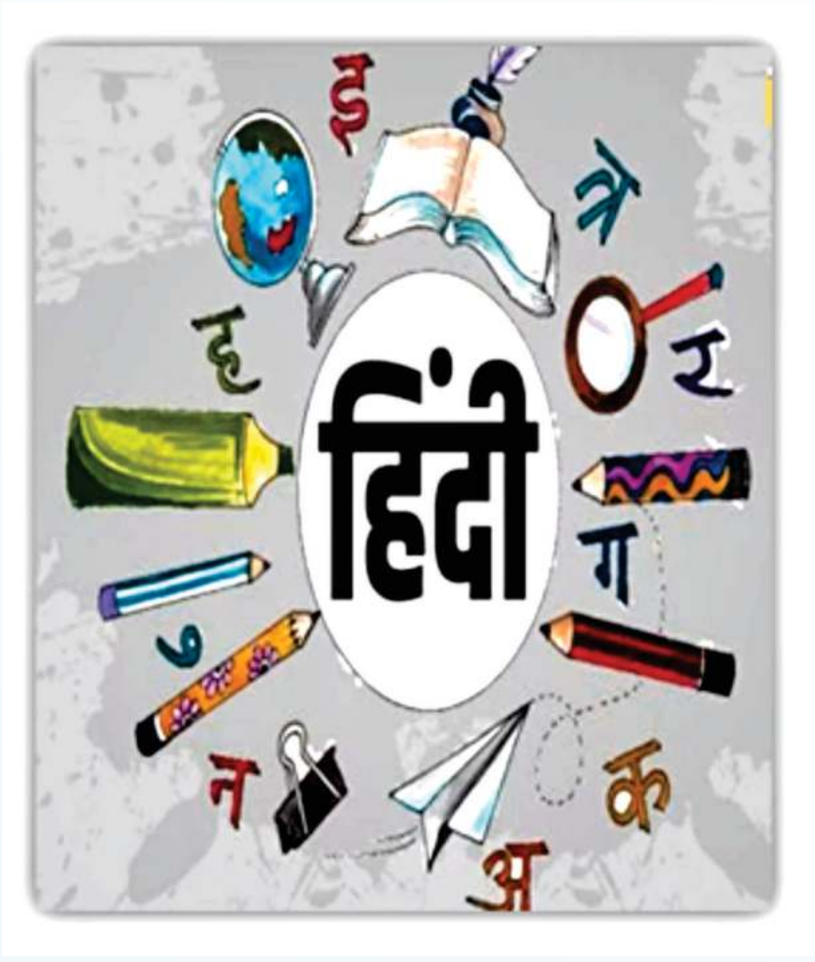
ऐसी इसकी शान

हिंदी ने इस देश को

एक सूत्र में पिरोया है

सभी भारतीय भाषाओं को

खुले दिल से अपनाया है



हिंदी है तो हम हैं

हम हैं, तो है हिंदुस्तान

हिंदी ही तो शान है

इस देश का अभिमान है

आओ हम सब मिलकर

करें यह निश्चय आज

दिल से अपनाएंगे हिंदी

छोड़ अंग्रेज़ी की आस



बाल कलाकार



शगुन अग्रवाल पुत्री श्री अभिषेक अग्रवाल,
सहायक लेखाधिकारी



पलक पुत्री श्री विक्रान्त कुमार,
सहायक लेखाधिकारी



नव्या त्रिपाठी पुत्री श्री नवीन त्रिपाठी,
सहायक लेखाधिकारी



शगुन अग्रवाल पुत्री श्री अभिषेक अग्रवाल, सहायक लेखाधिकारी



पलक पुत्री श्री विक्रान्त कुमार, सहायक लेखाधिकारी



ईरा पुत्री श्रीमती दीपा पवार, सहायक लेखाधिकारी



नव्या त्रिपाठी पुत्री श्री नवीन त्रिपाठी, सहायक लेखाधिकारी



प्रगति राना पुत्री श्रीमती राधा राना, लेखाकार



अथर्व पुत्र श्री शिवम लिलहोरी, लेखाकार



सानवी प्रिया लिलहोरी पुत्री श्री शिवम लिलहोरी, लेखाकार

हिंदी पखवाड़ा–2022

(दिनांक 14 सितम्बर से 29 सितम्बर तक)



श्री राजीव कुमार, महालेखाकार, कवि सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए।



कविता पाठ करते हुए श्री दिनेश शर्मा, स0लेखाधिकारी (तदर्थ)





मध्यवर्ती प्रतियोगिताओं का आयोजन



कार्यालय के कार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए।

पुरस्कार वितरण



श्री निशांत वैश्य को कहानी लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार देते हुए श्रीमती मीना बिष्ट, निदेशक (वायु सेना) ।



श्री चौधरी कौशतव, को पुरस्कार देते हुए श्री तुषार कैन, उपमहालेखाकार (निधि एवं लेखा)



पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान समस्त वरिष्ठ अधिकारीगण



कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए दर्शकगण



गृह पत्रिका "हिमज्योति" के द्वादश अंक का विमोचन

हिंदी प्रकोष्ठ की गतिविधियाँ



दिनांक 03.11.2022 को अमृतसर (पंजाब) में उत्तरी क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, आयोजित किया गया, जिसमें इस कार्यालय के डॉ0 दिनेश शर्मा, सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ) ने भाग लिया।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–1) देहरादून की वार्षिक हिन्दी ई– पत्रिका ''दूनवाणी'' के दशम् अंक में प्रकाशित लेखों में से इस कार्यालय (महालेखाकार लेखा एवं हक0) के श्री शिवम लिलहोरी 'बानगी' को उनके उत्कृष्ट लेख ''शहतूत का पेड़'' के लिए द्वितीय पुरस्कार (नकद एवं प्रशस्ति पत्र) से सम्मानित किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–1) देहरादून की वार्षिक हिन्दी ई– पत्रिका दूनवाणी के दशम् अंक के सम्पादक मण्डल के सदस्य के रूप में इस कार्यालय की सुश्री मीनाक्षी चौरसिया, कनिष्ठ अनुवादक को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

हिंदी कार्यशाला



श्री महिमानन्द भट्ट, प्रबन्धक राजभाषा (सेवानिवृत्त) कार्यशाला के उपरांत प्रतिभागियों के साथ।



डॉ. सविता मोहन (सेवानिवृत्त) हिन्दी कार्यशाला में।



श्री शांति प्रकाश जिज्ञासु, कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों के साथ विचार–विमर्श करते हुए।



डॉ.काव्यदीप जोशी, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशा0), डॉ. सविता मोहन (सेवानिवृत्त) को पौधा भेंट करते हुए।



डॉ. राकेश भट्ट (प्रवक्ता) हिन्दी कार्यशाला में।



डॉ. राकेश भट्ट (प्रवक्ता) हिंदी कार्यशाला लेते हुए

कल्याण अनुभाग की गतिविधियाँ



सोलन, हिमाचल प्रदेश में दिनांक 30.08.2022 से 11.09.2022 तक आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता HPCA (BCCI Mushtaq Ali Sr. National T20 Selection Matches/Inter District) में श्री शुभम नेगी, लेखाकार ने भाग लिया।



तमिलनाडु (चेन्नई) में दिनांक 17.09.2022 से 24.09.2022 तक आयोजित "All India Masters Badminton Ranking Tournament 2022" एवं दिनांक 17.10.2022 से 23.10.2022 तक पुणे (महाराष्ट्र) में आयोजित "All India Senior Masters Badminton Ranking Tournament 2022" में श्री अभिषेक अग्रवाल, स0ले0अ0 ने प्रतिभाग किया।







गांधीनगर (गुजरात) में दिनांकः 31.01.2023 से 06.02.2023 तक आयोजित "ऑल इंडिया सिविल सर्विसेस बैडमिटन टूर्नामेंट **2022-23** में श्री अभिषेक अग्रवाल, सहायक लेखाधिकारी व श्रीमती शिखा खण्डूरी, सहायक पर्यवेक्षक ने प्रतिभाग किया, जिसमें श्रीमती शिखा खण्डूरी, सहायक पर्यवेक्षक लगातार 9वीं बार स्वर्ण पदक (विजयी पुरस्कार) लेते हुए ।



हैदराबाद, तेलंगाना में दिनांकः 02.02.2023 से 05.02.2023 तक आयोजित "टेबल टेनिस चैंपियनशिप नेशनल मास्टर्स खेल 2023" में श्री राकेश कुमार वरिष्ठ, लेखाकार द्वारा प्रतिभाग किया गया





भुवनेश्वर, उड़ीसा में दिनांक 11.03.2023 से 19.03.2023 तक आयोजित "ऑल इंडिया सिविल सर्विसेस चेस टूर्नामेंट 2022-23" में श्री प्रशांत कुमार, स.ले.अ व श्री नितेश चौहान, लेखाकार द्वारा प्रतिभाग किया गया



नई दिल्ली में दिनांक 25.11.2022 से 27.11.2022 तक आयोजित "आई0ए0 एण्ड ए0डी0 नार्थ जोन कैरम टूर्नामेंट 2022-23" के प्रतिभागी

मनोरंजन क्लब की गतिविधियाँ





लेखा मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित कैरम प्रतियोगिता





कार्यालय की महिला कर्मियों के मनोरंजन हेतु महिला प्रतियोगिताओं का आयोजन



प्रतियोगिताओं के उपरांत महिला कार्मिक

उत्तराखण्ड में दिनांक 21.03.2023 से 23.3.2023 तक आयोजित उत्तर क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता की झलकियाँ







उत्तर क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता के समापन समारोह की झलकियाँ







दिनांक 02.02.2023 से 04.02.2023 तक नई दिल्ली में आयोजित उत्तर क्षेत्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता



दिनांक 18.03.2023 से 23.03.2023 तक भुवनेश्वर, उड़ीसा में आयोजित फुटबॉल प्रतियोगिता



ऑडिट जागरूकता सप्ताह
दिनांक 16.11.2022 से 22.11.2022 तक













दिनांक 21.6.2023 को महालेखाकार भवन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन







ऊर्जा संरक्षण दिवस के अवसर पर ONGC Technical Service, Dehradun द्वारा आयोजित क्विज प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर यथार्थ कुमार पुत्र श्री विक्रांत कुमार, सहायक लेखाधिकारी को माननीय मुख्य मंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी द्वारा ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया

बोर्ड – सी0आई0एस0सी0ई0 (कक्षा–12) 2022



- विद्यालय : टच वुड स्कूल
- छात्रा का नाम : अंचिता घिल्डियाल
- पिता का नाम : श्री गणेश प्रसाद
- माता का नाम : श्रीमती यशोदा घिल्डियाल
- अंक प्राप्त किए (प्रतिशत में) : 92%

सेवानिवृत्ति



श्री तुषार कैन, उपमहालेखाकार (निधि एवं लेखा)
श्री विजय चौहान, सहायक लेखाधिकारी
को पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए।



डॉ0 काव्यदीप जोशी, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशा0),
श्री संजय रैना, वरिष्ठ लेखाधिकारी
को को शॉल भेंट करते हुए।



डॉ0 काव्यदीप जोशी, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशा0)
श्री सिबु देबनाथ, सहायक पर्यवेक्षक
को गुलदस्ता भेंट करते हुए।



श्री राजीव कुमार, महालेखाकार,
श्री अरूण भटनागर, वरिष्ठ लेखाकार
को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।



श्री राजीव कुमार, महालेखाकार, श्री देवी दत्त पाण्डे,
वरिष्ठ लेखाधिकारी को शॉल भेंट करते हुए।

श्रद्धांजलि

बीते एक बरस में हमारे बीच के तीन साथियों के असमय प्रयाण का अप्रिय समाचार साझा करते हुए अत्यन्त कष्ट हो रहा है। पत्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की चिरशान्ति की कामना करता है।



स्व0 श्री अनिल सोनकर, सहायक पर्यवेक्षक



स्व0 श्री पुष्पेंद्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक



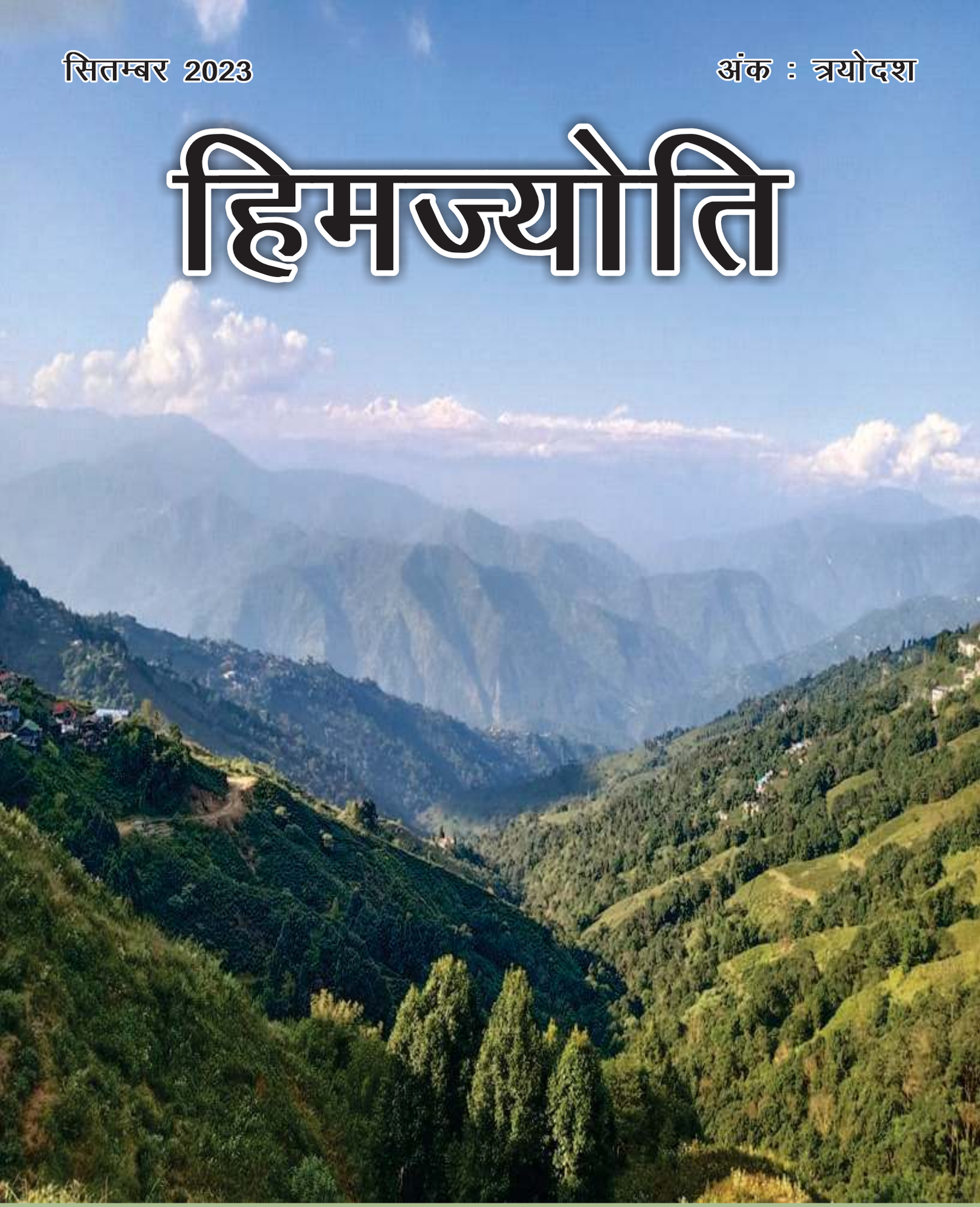
स्व0 श्री राकेश चन्द्र बिज्लवाण, सहायक पर्यवेक्षक



छायाचित्र – बृष्टि रावत पुत्री बीना रावत, वरिष्ठ लेखाकार

सितम्बर 2023 अंक : त्रयोदश

हिमज्योति



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

चौखम्बा पर्वत शृंखला, रूद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड
छायाचित्र – प्रशांत किमोठी